छत्तीसगढ़ शासन

सत्यमेव जयते

कक्षा 8

# सहायक वाचन

छत्तीसगढ़ एवं भारत के इतिहास, संस्कृति, तीज-त्यौहार एवं महापुरुषों की जानकारी से परिचित कराने हेतु

सरल भाषा
रोचक
सामग्री
संस्कारपूर्ण
ज्ञानवर्धक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT)
छ.ग. रायपुर

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रायोगिक संस्करण

## राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्

राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् की रचना को 150 वर्ष पूरे हो गए हैं। इस गीत की रचना महर्षि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 7 नवंबर, 1875 को की थी। 7 नवंबर, 2025 को इस राष्ट्रगीत की 150वीं वर्षगाँठ मनाई गई। यह गीत उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' में शामिल है। भारत माता की स्तुति और उनकी शक्तियों को प्रतिबिंबित करने वाले इस गीत ने संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधकर स्वतंत्रता आंदोलन को नवीन ऊर्जा से भर दिया था। 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा ने इसके खंडित छंदों को राष्ट्रगीत की मान्यता दी थी। अब भारत सरकार ने संपूर्ण छंदों को शिक्षा संस्थाओं सहित सभी शासकीय कार्यक्रमों/आयोजनों में गाया जाना अनिवार्य किया है।

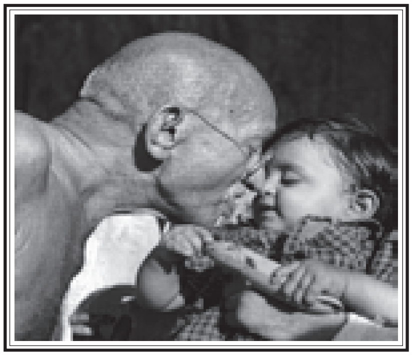

" देश प्रेम से बढ़कर कोई सेवा नहीं। "

**–महात्मा गांधी**

## राष्ट्रगीत

### वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्। वन्दे मातरम्।

शुभ्रज्योत्सना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम्, मातरम्। वन्दे मातरम्।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम्।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्।
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।

**श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय : आनंदमठ**

## राज्यगीत

### अरपा पइरी के धार, महानदी हे अपार

अरपा पइरी के धार महानदी हे अपार,
इन्द्राबती ह पखारय तोर पइँया।
महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया।।

सोहय बिन्दिया सही घाते डोंगरी, पहार
चन्दा सुरूज बने तोर नयना,
सोनहा धाने के संग,
लुगरा के हरियर रंग
तोर बोली जइसे सुघर मइना।
अँचरा तोरे डोलावय पुरवइया।।

( महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया।। )

रइगढ़ हाबय सुघर तोरे मँउरे मुकुट
सरगुजा ( अऊ ) बेलासपुर हे बहियाँ,
रइपुर कनिहा सही घाते सुग्घर फभय
दुरुग, बस्तर सोहय पयजनियाँ,
नाँदगाँवे नवा करधनियाँ
( महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया ।। )

**डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा**

# सहायक वाचन

## कक्षा 8

सत्रः 2026-27

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

निःशुल्क वितरण हेतु

**मुद्रणालय**

**शारदा ऑफसेट प्रिन्टर्स प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर**

''छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम'' द्वारा प्रदायित आंतरिक पृष्ठ 70 जीएसएम वाटरमार्क रील मैपलिथो पेपर कॉनफॉर्मिग टू बीआईएस स्पेशीफिकेशन 1848 (पार्ट 1) : 2018 विथ लेटेस्ट अमेडमेंट, इन साइज 84 सेमी विड्थ रील तथा कव्हर पृष्ठ 220 जीएसएम एमजी कव्हर पेपर कॉनफॉर्मिग टू बीआईएस स्पेशीफिकेशन आई एस 6956 : 2001 (रिफॉर्म्ड 2017) विथ वन साईड ग्लेज्ड (साईन) एंड लेटेस्ट अमेडमेंट्, इन सीट साईज **61cm X 86.5 cm** पर मुद्रित किया गया है।

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – 4,44,409

**प्रेरणास्रोत**
**डॉ. कमलप्रीत सिंह (भा.प्र.से.)**
**सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़**

**मार्गदर्शक**
**ऋतुराज रघुवंशी (भा.प्र.से.)**

**संचालक**
**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर**

**सलाहकार**

**जे.पी. रथ**
**अतिरिक्त संचालक**
**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और**
**प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर**

**के. कुमार**
**संयुक्त संचालक**
**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और**
**प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर**

**समन्वयक**
कौस्तभ चटर्जी (सहायक संचालक)
डॉ.डी.के.बोदले (से.नि.सहायक प्राध्यापक)

**विषयवस्तु चयन तथा संपादन**
डॉ. चितरंजन कर, श्री बलदाऊ राम साहू

**विषय विशेषज्ञ**
डॉ. चितरंजन कर, श्री बलदाऊ राम साहू, डॉ. सीमा श्रीवास्तव

**लेखन समूह**
श्री विनय शरण सिंह, श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव , श्री सीताराम साहू,
श्री पोखन लाल जायसवाल, श्री द्रोण साहू, श्रीमती मल्लिका रुद्रा,
श्रीमती प्रिया जोशी, श्रीमती रजनी शर्मा

**टंकण**
श्री डीकेश्वर वर्मा, कु.ईशा श्रीवास्तव

**आवरण, पृष्ठांकन एवं लेआऊट डिजाईन**
हिमांशु वर्मा, सुधीर कुमार वैष्णव

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर**

# आमुख

छत्तीसगढ़ स्कूली शिक्षा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पुस्तकों को अनुकूलित कर बच्चों को राष्ट्रीय स्तर के समतुल्य लाने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि राज्य के बच्चे किसी भी स्तर पर कमतर न रहें। साथ ही वे राज्य के पर्व-परंपराओं और कला- संस्कृति से भी परिचित हो सकें। इस उद्देश्य से छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग ने कक्षा 3 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए सहायक-वाचन निर्माण करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक के माध्यम से वाचन के प्रमुख उद्देश्य, जैसे- पठन में रुचि का विकास, अर्थ ग्रहण करने की क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल का संवर्धन, कल्पनाशीलता एवं चिंतन शक्ति का विकास करना है, जिससे बच्चे स्वतः स्फूर्त पठन एवं वाचन की ओर प्रेरित हों सकें और उनमें स्वतंत्र रूप से सीखने की प्रवृत्ति विकसित हो सके।

यह पुस्तक पाठ्यपुस्तक से इतर है। इस पुस्तक में रोचक कहानियों, कविताओं एवं महापुरुषों की जीवनियों के साथ साथ स्थानीय इतिहास, कला-संस्कृति, तीज -त्यौहार, पर्व-परंपराओं आदि की जानकारियां दी गई हैं। प्रायः ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पढ़ने के लिए पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध नहीं होती, इस कारण वे बहुत-सी जरुरी जानकारियाँ प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

आज शिक्षा के परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। अब बच्चे स्थानीय न होकर वैश्विक हो गए हैं। ज्ञान बढ़ा है तो प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बाल-केंद्रित शिक्षा, अनुभव आधारित शिक्षा एवं समृद्ध भाषाई शिक्षा पर विशेष बल देती है। इसलिए इस पुस्तक को तैयार करने में बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया गया है, ताकि बच्चे केवल पढ़ना ही न सीखें, बल्कि पढ़कर समझें, सोचें और तथ्यों को अपने अनुभवों से जोड़ सकें।

हम जानते हैं कि भारत का अपना गौरवशाली और समृद्ध इतिहास रहा है। इस समृद्ध इतिहास के साथ-साथ वे राज्य के स्थानीय कला-संस्कृति, इतिहास और लोक-जीवन को जानें और उस पर गर्व कर सकें। यह इस पुस्तक का व्यापक उद्देश्य है।

यह पुस्तक प्रायोगिक संस्करण के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। इस संदर्भ में विद्यार्थियों, शिक्षकों , पालकों एवं शिक्षाविदों से विनम्र अपेक्षा है कि वे हमें अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान करें, ताकि आगामी समय में इस पुस्तक को और अधिक उपयोगी, प्रभावी एवं छात्र केंद्रित बनाया जा सके।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक शिक्षकों के लिए शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाने में उपयोगी सिद्ध होगी तथा विद्यार्थियों के सर्वांगींण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पुस्तक निर्माण से जुड़े सभी शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, लेखकों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।

**संचालक**
**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण,**
**रायपुर छत्तीसगढ़**

# शिक्षकों के लिए निर्देश

छत्तीसगढ़ शासन की विशिष्ट सोच के अनुरूप कक्षा तीसरी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए सहायक वाचन पुस्तक का निर्माण राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के द्वारा किया गया है। इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों में पठन के प्रति रुचि विकसित करना, स्वतः स्फूर्त वाचन की आदत डालना तथा उनकी भाषा, चिंतन क्षमता का विकास करना तथा छत्तीसगढ़ के सामाजिक परिवेश से परिचित कराना है। अतः राज्य के विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों से अपेक्षा की जाती हैं कि वे शासन की मंशा के अनुरूप सहायक वाचन पुस्तक के प्रभावी उपयोग से बच्चों में अपेक्षित दक्षताओं का विकास के लिए आनंदमय वातावरण निर्मित करें।

शिक्षकों से निम्नलिखित बिंदुओं के अनुसार शिक्षण कार्य करने की अपेक्षा की जाती है—

1. सहायक वाचन को परीक्षा की दृष्टिकोण से प्रस्तुत न करें।बल्कि कक्षा में सहज, रोचक एवं सहभागितापूर्ण वातावरण बनाएँ, ताकि बच्चे इसे उत्साहपूर्वक पढ़ने के लिए तैयार रहे।

2. विद्यार्थियों को स्वयं पढ़ने, समझने एवं अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने का अवसर दें।

3. बच्चों से क्रमशः सस्वर वाचन, समूह वाचन तथा मौन वाचन करवाएँ, जिससे स्पष्ट उच्चारण एवं अर्थग्रहण की क्षमता का विकास हो सके।

4. पाठों को बच्चों के परिवेश, स्थानीय संस्कृति, तीज-त्यौहार एवं दैनिक जीवन से जोड़कर समझाएँ, ताकि वे विषयवस्तु को सहज रूप से आत्मसात कर सकें। छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, महापुरुषों, ऐतिहासिक स्थलों और जैव-विविधता पर चर्चा कर समझ विकसित करें। यदि पाठ किसी विशेष जिले या त्यौहार (जैसे: हरेली, तीजा) पर आधारित है, तो बच्चों को उनके व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

5. पाठ पढ़ाने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछें, उनके विचार सुनें तथा चर्चा कराएँ। इससे उनमें आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।

6. कक्षा में कहानी कथन, चित्रांकन, भूमिका निर्वहन, कविता वाचन, समूह चर्चा

एवं लेखन जैसी गतिविधियों के माध्यम से सीखने को रोचक बनाएँ।

7. पाठों में निहित मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक सरोकारों को बच्चों के जीवन से जोड़कर समझाएँ।

8. बच्चों को नियमित रूप से पुस्तक पढ़ने हेतु अतिरिक्त पठन सामग्री के उपयोग के लिए प्रेरित करें।

9. कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ने एवं बोलने का अवसर दें। धीमी गति से सीखने वाले एवं संकोची बच्चों पर विशेष ध्यान देवें।

10.महापुरुषों या लोक कथाओं पर आधारित पाठों का कक्षा में मंचन करवाएँ।

11. बच्चों को छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खान-पान, खेलकूद, आभूषण, तीज-त्योहार या औजारों के बारे में जानकारी एकत्र करने हेतु प्रोजेक्ट कार्य दें।

13. सहायक वाचन का मूल्यांकन पारंपरिक रटने वाली पद्धति से नहीं होना चाहिए। बल्कि मूल्यांकन के लिए खुले प्रश्न पूछें, जैसे: "यदि आप उस जगह होते तो क्या करते?" या "आपको इस कहानी का कौन सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?" आदि।

टीप - यह पुस्तक एक प्रायोगिक संस्करण है। अतः शिक्षकगण अपने अनुभव एवं सुझाव साझा करें, ताकि भविष्य में पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

**संचालक**
**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण,**
**रायपुर छत्तीसगढ़**

# राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छत्तीसगढ़

| नाम | पद नाम |
|---|---|
| 1. श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति, गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर | - अध्यक्ष |
| 2. संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर | - सदस्य सचिव |
| 3. संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़ | - सदस्य |
| 4. मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़ | - सदस्य |
| 5. डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर | - सदस्य |
| 6. डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर | - सदस्य |
| 7. श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर | - सदस्य |
| 8.श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी, खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम | - सदस्य |
| 9. श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर | - सदस्य |
| 10. श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर | - सदस्य |

# अनुक्रमणिका


| पाठ सामग्री | | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|
| 1. क़दम मिला कर चलना होगा (कविता) | अटल बिहारी वाजपेयी | 1 |
| 2. कुएँ का कछुआ (कहानी) | लेखक मंडल | 2 |
| 3. पर्यावरण मित्र (आलेख) | लेखक मंडल | 5 |
| 4. अभिमन्यु की वीरता | लेखक मंडल | 9 |
| 5. मिसाइल मैन डॉ. कलाम (जीवनी) | लेखक मंडल | 11 |
| 6. सच है, विपत्ति जब आती है (कविता) | रामधारी सिंह दिनकर | 16 |
| 7. अहंकार का अंत | लेखक मंडल | 18 |
| 8. छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ (निबंध) | भावसिंह हिरवानी | 19 |
| 8. छत्तीसगढ़ में पारंपरिक देहालेखन : गोदना (आलेख) | लेखक मंडल | 22 |
| 9. कौआ और रानी (लोककथा) | लेखक मंडल | 26 |
| 10. ऐसा था इनका बचपन – महापुरुषों की कहानियाँ (प्रेरक प्रसंग) | लेखक मंडल | 28 |
| 11. अब तक सुमनों पर चलते थे (कविता) | शिवमंगल सिंह सुमन | 31 |
| 12. एक राष्ट्रवादी चिंतक : पंडित दीनदयाल उपाध्याय (जीवनी) | लेखक मंडल | 32 |
| 13. हमारे चारों धाम (कविता) | लेखक मंडल | 36 |
| 14. गोंडवाना मरीन फ़ासिल्स पार्क (पर्यटन स्थल) | लेखक मंडल | 37 |
| 15. लिए तिरंगा हाथ में ! | डॉ.रामेश्वर प्रसाद सारस्वत | 40 |
| नोट्स | | 41 |

# क़दम मिला कर चलना होगा

क़दम मिला कर चलना होगा
बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रूदन में, तूफ़ानों में,
अगर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कहार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अब,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न मांगते,
पावस बनकर ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

कुछ काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुबन,
परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

# कुएँ का कछुआ

वह एक कुएँ का कछुआ था। "अरे, कुएँ का कछुआ नहीं पापा, 'कुएँ का मेंढक' होता है। उसी को कूप-मण्डूक भी कहते हैं। मतलब, जिसे बहुत कम अनुभव हो।" पापा ने कहानी सुनानी शुरू ही की थी कि पल्लव बीच में बोल पड़ा था।

"सही कह रहे हो पल्लव। 'कुएँ का मेंढक होना' एक मुहावरा है और इस मुहावरे को लेकर कई कहानियाँ भी हैं। लेकिन मैं तुम्हें आज एक ऐसे कछुए की कहानी सुनाने जा रहा हूँ, जो एक कुएँ में था।"

"ओह ! सॉरी पापा, हाँ तो आप बताइए। उस कछुए के बारे में।"

पापा ने अपनी बात को आगे बढ़ाया, "हाँ तो एक कुएँ में एक कछुआ रहता था। तुमने देखा होगा, कछुए की पीठ पत्थर की तरह कठोर होती है।"

"जी पापा"

"तो एक काम करते हैं, उस कछुए का नाम स्टोनी रख देते हैं।"

"स्टोनी...।" कह कर पल्लव सोचने लगा।

फिर बोला, "नहीं पापा टोनी नाम रखते हैं।"

"चलो ठीक है, टोनी ही सही।" कहते हुए पापा ने कहानी को आगे बढ़ाया।

तो टोनी कछुआ एक कुएँ में रहता था। वैसे टोनी जन्म से कुएँ में नहीं रहता था। उसके मम्मी-पापा तो गाँव के एक तालाब में रहते थे। टोनी भी उन्हीं के साथ रहता था। जब भूख लगती तो पानी में तैरकर छोटी-छोटी मछलियों, अन्य जीव-जंतु व वनस्पतियों को खाता। पेट भर जाने पर वहीं पानी में ही छुपकर बैठ जाता। कभी-कभी तालाब के किनारे भी जाकर बैठ जाता और वहीं से बाहरी दुनिया का नज़ारा देखता। जैसे ही कोई उधर से आता हुआ दिखाई पड़ता, टोनी धीरे से तालाब की ओर चल पड़ता और भीतर जाकर छुप जाता।

"टोनी तुम तालाब के बाहर मत जाया करो, नहीं तो कोई पकड़ ले जाएगा।" उसके मम्मी-पापा मना करते, लेकिन टोनी को बाहरी दुनिया में घूमने का बड़ा शौक था।

वह बोलता, "मुझे कोई नहीं पकड़ सकता, मैं दूर-दूर तक देखता रहता हूँ।"

एक दिन की बात है। तेज वर्षा हो रही थी। टोनी तालाब के बाहर निकलकर आसमान से गिरते पानी की रिमझिम बूँदों का आनंद ले रहा था। उसे दूर-दूर तक कोई दिखाई न दिया तो सोचा और आगे चलकर देखता हूँ। वह धीरे-धीरे काफी दूर आ गया। वहाँ एक महुए का पेड़ था। बस वहीं छुपकर पानी का आनंद लेने लगा। यह भी सोचा कि कोई आएगा, तो सूखे पत्तों में छिप जाऊँगा।

उधर दो बच्चे वैभव और अंबुज भी पानी में भीगने का आनंद ले रहे थे। उन्होंने टोनी को देख लिया। वे चुपके से टोनी के पास पहुँच गए।

अचानक अंबुज और आनंद को देख टोनी घबरा गया। वह बहुत तेज भाग भी नहीं सकता था। भागने का बहुत प्रयास किया, लेकिन तब तक अंबुज ने टोनी को पकड़ लिया। उसे उठाकर घर ले आया। वैभव ने मना भी किया कि इसे परेशान मत करो, लेकिन अंबुज ने उसे नहीं छोड़ा।

दादा जी घर पर थे। वे उन्होंने देख लिया। बच्चों को समझाते हुए वे बोले, "अरे, इसे क्यों उठा लाए ? देखो तो कितना प्यारा छोटा-सा बच्चा है। इसे तुरंत तालाब में छोड़कर आओ। इसके मम्मी-पापा परेशान हो जाएँगे।"

अंबुज उसे छोड़ना नहीं चाहता था, लेकिन दादा जी की बात भी माननी थी। दादा जी बच्चों को डाँटते नहीं थे, प्यार से समझाते थे, इसलिए बच्चे उनका कहना मानते थे। पानी तेज बरस रहा था। तालाब तक जाने में उसे डर भी लग रहा था तो अंबुज ने कहा, "ठीक है दादा जी, पानी बंद होते ही हम इसे तालाब में छोड़ आएँगे।"

बारिश के थमने पर अंबुज बाहर निकला। उसने कछुए को तालाब में न डालकर, घर के नज़दीक कुएँ में डाल दिया। आनंद को यह अच्छा नहीं लगा।

अब कछुआ एक नई जगह आ चुका था। जहाँ चारों ओर अँधेरा था। उसे इस नई जगह में अच्छा नहीं लग रहा था। एक तो छोटी-सी जगह, वह जैसे ही थोड़ी दूर तैरता तो कुएँ की दीवार से टकरा जाता। अब उसे भूख भी लग रही थी। कुएँ में उसे खाने को बहुत कुछ मिल रहा था, लेकिन उसका मन नहीं लग रहा था। उसे अपने मम्मी-पापा

की बहुत याद आ रही थी, लेकिन वह अब करे तो क्या करे। उसे अपनी गलती पर बहुत दुःख हो रहा था। मम्मी-पापा की बात न मानने का पछतावा भी हो रहा था। दुःखी कछुआ अब उस कुएँ में रहने को मजबूर था।

इधर आनंद बहुत चिंतित था। टोनी अब अपने मम्मी-पापा से कैसे मिल पाएगा ? उसके मम्मी-पापा उसे खोज रहे होंगे। टोनी के घर से बाहर जाने पर उनके मम्मी–पापा बहुत परेशान हो जाते हैं। उसने दीनू काका को सारी बात बता दी। दीनू काका उनके घर का काम करते थे। जैसे गाय-बैल को चारा-पानी देना। दीनू काका ने कहा, "देखो, मैं उसे निकालने की कोशिश करता हूँ।"

जब से घर में हैंडपंप लग गया। लोग कुएँ से पानी कम ही निकालते थे। अब तो सरकारी नल की पाईप भी गाँव तक आ गई है। फिर भी कुएँ में जब भी कोई पानी भरने के लिए बाल्टी डालता तो टोनी डर के कारण दीवार से चिपक जाता।

दीनू काका ने भी कुएँ में बाल्टी डाली। टोनी डरकर दीवार की ओर भागा। काका ने बहुत कोशिश की, किंतु उसे बाहर निकालने में सफल नहीं हुए।

टोनी कई दिनों तक कुएँ में ही रहा, लेकिन उसका मन बहुत घबरा रहा था। कुएँ में पानी तो था, उसके भोजन का सामान भी था, लेकिन उसे मम्मी-पापा की बहुत याद आ रही थी। उसका कोई साथी भी वहाँ नहीं था। टोनी को मम्मी-पापा की बात न मानने का पछतावा भी हो रहा था।

एक दिन उसने सोचा, जो बाल्टी ऊपर से आती है, वह तो बाहर की ओर जाती भी है, "तो मैं भी इसमें बैठकर बाहर जा सकता हूँ।" तभी कोई पानी भरने आया, लेकिन जब तक वह बाल्टी में घुसने की सोचता, पानी से भरी बाल्टी को ऊपर खींच लिया जाता। अगली बार तो टोनी तैयार बैठा था। वह जल्दी से तैरकर बाल्टी में आ गया। ऊपर दीनू काका ही थे। वे बाल्टी के भीतर कछुए को देखकर बहुत खुश हुए।

काका ने तुरंत आनंद को बुलाया। वह भी बहुत खुश हुआ। दीनू काका ने भी देर नहीं की। उन्होंने टोनी कछुए को ले जाकर तालाब में डाल दिया। अब टोनी अपने घर पहुँच गया। तालाब में अपने मम्मी-पापा से मिलकर टोनी भी बहुत खुश हुआ। इतना खुश-इतना खुश कि वह सबसे लिपट कर रोने लगा।

# पर्यावरण-मित्र

**(विद्यालय प्रांगण  में शिक्षिकाएँ समाचार पत्र पढ़ते हुए आपस में चर्चा कर रही हैं। विद्यार्थी उनकी बातों को सुनकर शिक्षिका से बात करते हैं।)**

**पात्र :-**

अदिति – शिक्षिका

कनन -  8वीं का छात्र

वन्या -  8वीं की छात्रा

स्थान -  विद्यालय प्रांगण

(स्कूल पहुँचते ही कनन और वन्या ने शिक्षिकाओं से प्रदूषण पर बाते करते हुए सुना।)

अदिति कह रही थी-"आज पूरे 'न्यूज़ में ग्लोबल वॉर्मिंग और प्रदूषण पर ही चर्चा चल रही है। हम पर्यावरण को किस प्रकार सुरक्षित रखें। बच्चों को कैसे जागरूक करें?" यह हमारे लिए विचारणीय है।

कनन – "मैम, यह प्रदूषण और ग्लोबल वॉर्मिंग क्या है ?"

अदिति - "हानिकारक पदार्थों से पर्यावरण का दूषित होना ही 'प्रदूषण' कहलाता है। प्रदूषण पृथ्वी के साथ ही उस पर रहने वाले पेड़-पौधे, जानवरों और मनुष्यों को प्रभावित करता है।"

कनन – और ग्लोबल वॉर्मिंग ?

अदिति – "पृथ्वी में बढ़ रहे प्रदूषण के कारण पर्यावरण में हो रहे परिवर्तन, तापमान-वृद्धि और मौसम में बदलाव को 'ग्लोबल वॉर्मिंग' कहते हैं"।

वन्या- "ओह ! मतलब, प्रदूषण हमारे पर्यावरण के लिए बहुत खतरनाक है?

अदिति – हाँ, बिल्कुल, इसीलिए तो पर्यावरण को सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।

कनन – "तो, हम प्रदूषण को कैसे रोक सकते हैं ?"

अदिति – "प्रदूषण को नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी तरीक़ा है- किसी प्रदूषण फैलाने वाली वस्तु का प्रयोग कम करना, पुनः प्रयोग एवं पुन:चक्रण करना। वस्तुओं का उपयोग पर्यावरण अनुकूल हो और जो वस्तु गलने योग्य न हो, उसका दोबारा प्रयोग करने का तरीक़ा अपनाना चाहिए। साथ ही अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण-संतुलन बनाए रखना चाहिए"।

वन्या बोली - " प्रदूषण तो केवल हवा और पानी में ही होता है न ?

अदिति - अरे नहीं ! प्रदूषण के कई प्रकार होते हैं- जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, मृदा-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण और खाद्य-प्रदूषण।

वन्या – "वायु-प्रदूषण क्या है? कृपया बताइए।"

अदिति - "जब धुआँ, धूल और कार्बनिक गैसों के प्रभाव से हवा दूषित हो जाती है, तो इसे वायु-प्रदूषण कहते हैं। इस वजह से श्वास-संबंधी बहुत-सी बीमारियाँ होती हैं।"

कनन – "अगर हम स्वयं के डीज़ल और पेट्रोल से चलने वाले वाहनों का प्रयोग अधिक करें और फ़ैक्ट्रियों का धुआँ हमारी साँस में आए, तो हमें नुक़सान होगा ?"

अदिति – "हाँ ! इसीलिए हमें वाहनों और फ़ैक्ट्रियों से निकलने वाले धुएँ को कम करना चाहिए। अलग-अलग वाहनों का अधिक प्रयोग करने के स्थान पर सार्वजनिक वाहनों, जैसे- बस, रेल का प्रयोग करना चाहिए। इलेक्ट्रिक वाहन भी एक अच्छा विकल्प है।

बच्चो, खाद्य-प्रदूषण के

बारे में भी जानना चाहोगे ?

कनन, वन्या- "जी हाँ, बताइए"।

जब हमारे भोजन में हानिकारक रसायनों, कीटनाशक मिलावट और पुरानी खराब वस्तुओं को मिलाया जाता है, तो भोजन की गुणवत्ता और प्रभाव दोनों कम हो जाते हैं।

आजकल पैक्ड फ़ूड या जंक फ़ूड का प्रचलन है, जिसे लंबे समय तक काम में लाने के लिए बहुत से प्रिज़रवेटिव का उपयोग किया जाता है, जो हमारे शरीर को खराब करते हैं, मोटापा बढ़ाते हैं और भी बहुत-सी बीमारियों को जन्म देते हैं। (तभी ज़ोरों से किसी वाहन के हॉर्न की आवाज़ आती है। सभी बच्चे चौंक जाते हैं।)

अदिति - और यह रहा ध्वनि-प्रदूषण। (सभी ज़ोर से हँसते हैं।)

वन्या – आजकल लोग सड़क पर बेवजह हॉर्न बजाते रहते हैं, लाउडस्पीकर में गाने बजाते रहते हैं, और हर त्योहार में डीजे बजाकर शोर मचाया जाता है।

अदिति - ये सभी ध्वनि प्रदूषण के कारक हैं। तेज आवाज़ जो हमारे कानों को नुक़सान पहुँचाती है, उसका असर हमारे दिमाग़ पर भी होता है, जिससे बहरापन और मानसिक बीमारियाँ होती हैं, साथ ही हमारी एकाग्रता में भी कमी आ रही है। इसलिए अस्पतालों, स्कूलों और महत्वपूर्ण स्थानों के बाहर हॉर्न न बजाने का संकेत बना होता है।

कनन - अच्छा। क्या इन फ़ैक्ट्रियों से निकलने वाले गंदे पानी की वजह से जल प्रदूषित होता है?

अदिति - बिल्कुल सही कनन। इसके अलावा नदी, तालाबों में कचरा डालने, अस्थियों बहाने, रसायनों के प्रयोग से भी जल-प्रदूषण होता है। जिसके प्रभाव से बहुत-सी बीमारियाँ होती हैं, जैसे - त्वचा रोग। इससे जलीय जीवों को भी नुकसान पहुँचता है।

कनन – पानी से मिट्टी, मिट्टी से हमारे खाद्य पदार्थ भी प्रदूषित होते हैं, तो क्या इसका असर पेड़-पौधों और अनाज पर भी होता है?

अदिति – अवश्य।

वन्या – " तो क्यों न हम आज से ही पेंटिंग बनाकर और रैली निकालकर सभी को जागरूक करें"।

कनन – "आज पहले स्कूल की और आस-पास की सफाई करते हैं। एक गड्ढा भी तो बनाना होगा, कचरे से खाद बनाने के लिए।"

अदिति (थोड़ा परेशान होते हुए) – "इन सभी प्रदूषणों के बचाव के तरीके तो हमने सीख लिए, पर क्या मन के प्रदूषण पर हम रोक लगा पा रहे हैं ?"

वन्या - "हम समझे नहीं ? थोड़ा और स्पष्ट कीजिए।"

अदिति - "हम टी.वी., मोबाइल के प्रभाव से अपने आसपास में हो रहे ग़लत व्यवहार को अपने स्वभाव में जगह देते जा रहे हैं। गालियाँ, नशे की आदत, झूठ बोलना, दूसरों का अपमान और बुरे व्यवहार को अपनी ज़िंदगी में शामिल कर चुके हैं। पहले हमें इन आदतों में बदलाव लाना होगा। जब हम अपने मन की बुराइयों को दूर करेंगे, तो प्रकृति की सुरक्षा के प्रति हम स्वतः ही सजग हो जाएँगे।"

कनन- "इसका अर्थ हुआ कि हमें स्वयं के आचरण और विचार को स्वस्थ बनाना होगा और अच्छा व्यवहार करते हुए नई शुरुआत करनी होगी।"

अदिति - बहुत अच्छा बच्चो! चलो, आज से ही शुरुआत करते हैं, अब पर्यावरण को सुरक्षित रखना हम सबकी ज़िम्मेदारी है।

सभी एक साथ कहते हैं - "पर्यावरण-सुरक्षा की ज़िम्मेदारी, हम सबकी समझ और साझेदारी।"

# अभिमन्यु की वीरता

महाभारत के युद्ध में पितामह के बाद आचार्य द्रोण कौरव-सेनापति बने। उन्होंने पाँच दिन तक सेना का संचालन करते हुए । पांडव-सेना की नाक में दम कर दिया।

युद्ध के तेरहवें दिन द्रोणाचार्य ने कौरव सेना को चक्रव्यूह की रचना में खड़ा किया। अर्जुन को चकमा देकर लड़ते हुए चक्रव्यूह रचना से दूर ले जाने की योजना बनी, क्योंकि अर्जुन के रहते कौरव सफल नहीं हो सकते थे।

दुर्भाग्य से अर्जुन कौरवों की चाल में फँस गए । वे लड़ते हुए दूर निकल गए । पांडव-सेना में अर्जुन को छोड़कर कोई दूसरा चक्रव्यूह की भेदन-क्रिया नहीं जानता था। सभी पांडव चिंतित बैठे थे । युधिष्ठिर बहुत परेशान थे।

तभी अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु, युधिष्ठिर से बोला, "महाराज, आप चिंता न करें । मैं कोशिश करूँगा। चक्रव्यूह में प्रवेश करना तो मुझे आता है, लेकिन व्यूह से निकलना मुझे याद नहीं है।" उस समय अभिमन्यु की उम्र 16 वर्ष थी|

अभिमन्यु की बात सुनकर पांडवों के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई । युधिष्ठिर बोले-

"बेटे, एक बार व्यूह तोड़कर तुम भीतर प्रवेश तो करो, फिर हम सभी तुम्हारे पीछे-पीछे चले आएँगे।"

युद्ध शुरू हुआ। अभिमन्यु यद्यपि बालक था, किंतु वह अद्भुत वीर था। उसके युद्ध-कौशल से कौरव-सेना में हलचल मच गई। द्रोणाचार्य के देखते-देखते उनका बनाया हुआ चक्रव्यूह भेद कर वीर अभिमन्यु उसके भीतर पहुँच गया। उसने कौरव-सेना की धज्जी उड़ा दी। चारों ओर लाशें बिछ गईं । जिधर देखो उधर धनुष, बाण, ढाल, तलवार, फरसे, गदा, अंकुश, भाले, रास, चाबुक और शंख आदि बिखरे पड़े थे। कटे हुए हाथ, फटे हुए सिर, छिन्न-भिन्न शरीरों से मैदान भरा था।

यह सर्वनाश देखकर दुर्योधन गुस्से से भर उठा और स्वयं अभिमन्यु से जा भिड़ा। वीर अभिमन्यु उस दिन दुर्योधन का काम तमाम कर देता, लेकिन द्रोणाचार्य आदि ने मिलकर उसकी जान बचा ली। अब तो दुर्योधन और भी खीझ उठा। धर्मयुद्ध को छोड़कर कौरव वीरों ने चारों ओर से अभिमन्यु को घेर लिया। उसके धनुष को धोखे से काट दिया। तब रथ का चक्का ही लेकर वीर अभिमन्यु कौरवों से भिड़ गया । अंत में जयद्रथ, कर्ण, दुर्योधन आदि ने एक साथ मिलकर अभिमन्यु का वध कर दिया ।

पांडव में शोक छा गया । अर्जुन पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर बेसुध हो गए । जब होश आए तो उन्होंने प्रण किया कि सूर्यास्त के पहले मैं जयद्रथ का वध कर डालूँगा, अन्यथा आग जलकर प्राण दे दूँगा ।

दुर्योधन ने दूसरे दिन जयद्रथ को छिपा दिया। उसने सोचा था- न जयद्रथ उस दिन दिखेगा, न अर्जुन उसे मार पाएँगे । फिर तो अर्जुन अपने प्रण के अनुसार स्वयं जल मरेंगे। सूर्यास्त हो गया। किंतु अर्जुन जयद्रथ को ढूँढ़ नहीं पाए । फिर क्या था? चिता बनाई गई। अर्जुन जलने के लिए तैयार थे। पांडव -सेना में शोक छा गया। दुर्योधन खुश था। जयद्रथ भी प्रकट होकर खुशी से नाच रहा था। तभी आकाश

में बादलों के बीच से एकाएक सूर्यदेव निकल आए। यह सब कृष्ण की माया थी। कृष्ण ने शीघ्र अर्जुन से कहा-"अर्जुन अपना गांडीव उठाओ। जयप्रथ का सिर धड़ से अलग कर दो, अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है।"

जयद्रथ अब बचकर जा नहीं सकता था। क्षण भर में उसका सिर कटकर धरती पर लोटने लगा। इस प्रकार अर्जुन ने अपने पुत्र अभिमन्यु के वध का बदला ले लिया।

# मिसाइल मैन – डॉ. ए.पी.जे. कलाम

कक्षा में पहुँचते ही शिक्षक ने पूछा, "बच्चो, भारत देश के उस राष्ट्रपति का नाम कौन बताएगा; जिन्हें 'मिसाइल मैन' भी कहते हैं ? "सर, डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।" आयुष ने तुरंत खड़े होकर उत्तर दिया।

"वाह! बहुत अच्छा।" शिक्षक ने आयुष की सराहना करते हुए आगे कहा, " हाँ, तो बच्चो, आज की 'विज्ञान-सभा' में हम सब डॉ. कलाम सर के जीवन-परिचय पर विस्तृत चर्चा करेंगे।"

दरअसल, इस विद्यालय में माह के तीसरे शनिवार को दोपहर बाद 'विज्ञान-सभा' का आयोजन होता है, जिस हेतु एक सप्ताह पहले ही विषय को बता दिया जाता है। अतः सभा में आते ही शिक्षक ने उक्त विषय से संबंधित एक प्रश्न कर दिया, जिसका समुचित उत्तर पाकर उन्होंने फिर कहा, "चलो, पहले एक-एक छात्र डॉ. कलाम जी के विषय में बताए। आदित्य, तुम बताओ।"

"सर, भारत में मिसाइल के जनक डॉ.ए.पी.जे. कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वर में 15 अक्टूबर, 1931 को हुआ था। उनके पिता श्री जैनुलाब्दीन एक ग़रीब परिवार के थे और बहुत कम पढ़े-लिखे थे। वे एक मछुवारे का जीवन व्यतीत करते थे।"

इस बीच पावनी ने हाथ ऊपर उठाया, शिक्षक ने कहा, "हाँ, तुम बताओ।"

"सर, डॉ. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में पहला भारतीय अंतरिक्ष यान 21 नवंबर, 1969 को छोड़ा गया था, जिसे नासा में तैयार किया गया था।"

“वाह ! बहुत बढ़िया ! अच्छा, उनका पूरा नाम कौन बताएगा ?”

"डॉ. अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम।" दुलेश्वर ने बताया।

"हाँ, बहुत अच्छा। ऐसा लगता है, आज सब लोग अच्छी तैयारी करके आए हो। तुम लोगों ने अच्छी जानकारी दी। एक बार सभी के लिए ज़ोरदार तालियाँ, फिर मैं तुम लोगों को कुछ विस्तार से बताता हूँ।" बच्चों ने तालियाँ बजाईं। शिक्षक ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए फिर कहा, "तुम लोगों ने डॉ. कलाम जी के जन्म और परिवार के विषय में बताया। अब आगे सुनो। सफलतापूर्वक हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करके उन्होंने तिरुचिरापल्ली स्थित सेंट जोसेफ़ कॉलेज में प्रवेश लिया। उन्हें पढ़ाई के बाद जो भी समय मिलता, अपने बड़े भाई की परचून की दुकान पर हाथ बटाया करते थे। यही नहीं बालक कलाम सुबह-सुबह उठकर अख़बार भी बेचते थे।

उन्होंने पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अध्ययन के पश्चात् टाल्स्टॉय, स्कॉट, हार्डी- जैसे लेखकों की रचनाएँ भी पढ़ीं। भौतिकशास्त्र के अध्ययन के समय रेडियोधर्मिता, परमाणु-संरचना आदि उनके प्रिय विषय थे। उन्हें विज्ञान अध्ययन के साथ काल्पनिक कहानियों को पढ़ने का भी बहुत शौक था, जिनमें प्रायः अंतरिक्ष,चंद्रमा या किसी ग्रह की यात्रा का वर्णन होता था। बी.एस.सी की डिग्री लेने के पश्चात् वे एरोनॉटिक्स में इंजीनियरिंग करना चाहते थे। किंतु आर्थिक रूप से घर की स्थिति अच्छी नहीं थी, अतः उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु बहन के सोने की चूड़ियाँ गिरवी रखनी पड़ीं। अब्दुल कलाम ने 'मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नॉलॉजी' में प्रवेश लिया, जहाँ उन्होंने एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग विषय चुना।

विद्यार्थी कलाम ने अपने अध्ययन-काल में प्रो. स्पोंडर के साथ जर्मन

युद्धक विमान की डिज़ाइन-प्रक्रिया में भाग लिया। हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड, बेंगलुरू में एक प्रशिक्षार्थी के रूप में रहे, जहाँ उन्होंने हवाई जहाज़ के इंजन के ओवरहालिंग का कार्य विधिवत सीखा। इंजीनियरिंग पूर्ण करने के पश्चात् उन्हें रक्षा मंत्रालय के अनुसंधान विभाग में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के रूप में 1958 में नियुक्ति मिली।

धीरे-धीरे वे आगे बढ़ते गए और भारत देश के मिसाइल मैन हो गए। आग्नि मिसाइल के सफल प्रक्षेपण के पश्चात् उन्हें 1981 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया और डिफ़ेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट लेबोरेटरी के निदेशक नियुक्त किए गए। उनके नेतृत्व में अग्नि, पृथ्वी, ब्रह्मोस, आकाश, त्रिशूल आदि मिसाइल तैयार किए गए|

रॉकेट ईंधन तैयार करने, प्रक्षेपण संयंत्र, एरोनॉटिक्स, एयरोस्पेस सामग्री तैयार करने हेतु उन्होंने अंतरिक्ष विज्ञान में व्यापक शोध किया। उन्होंने नियंत्रण केंद्र स्थापित किया, तो रोहिणी रॉकेट कार्यक्रम भी बनाया।

देश-हित में किए गए तमाम अनुसंधानों के आधार पर उन्हें 1997 में भारत-रत्न से अलंकृत किया गया। वे एक ऐसे भारतीय वैज्ञानिक और राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने भारत के मिसाइल और परमाणु-हथियार कार्यक्रमों के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई और 15 जुलाई, 2002 से 2007 तक भारत के राष्ट्रपति भी रहे।

डॉ. कलाम ने कई महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की है। उनकी तीन कृतियों का नाम कौन बताएगा ? किशोर ने तत्काल ही हाथ उठा दिया।

"हाँ बताओ।"

"सर, उनकी प्रमुख कृतियों में 'अग्नि की उड़ान', 'भारत-2020' और 'इग्नाइटेड माइंड' हैं।

"बहुत अच्छा। देखो, वैसे तो उनके सम्मानों की बहुत लंबी सूची है, लेकिन उनमें से कुछ पुरस्कारों के नाम कौन बताएगा" ? पीछे से वैशाली ने हाथ उपर उठाया।

"हाँ, बताओ वैशाली।"

"उन्हें 25 से अधिक विश्वविद्यालय से 'डॉक्टर ऑफ़ साइंस' की मानद उपाधि मिली, जो पी-एच.डी. से आगे बढ़कर किसी व्यक्ति के वैज्ञानिक अनुसन्धान और विद्वत्तापूर्ण योगदान को मान्यता देती है। उन्हें नेशनल डिज़ाइन पुरस्कार, उत्कृष्ट अनुसंधान हेतु एच. के. फ़िरोडिया पुरस्कार, वाई. नायडुम्मा स्मृति स्वर्ण पदक और भारत-रत्न-जैसे सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुए।"

उनके जीवन की एक बड़ी घटना बताता हूँ, जिसके पश्चात् उनके भीतर व्यापक परिवर्तन आया। डॉ. अब्दुल कलाम ने भारतीय वायुसेना में पायलट बनने हेतु एक साक्षात्कार दिया। उसमें वे चयनित नहीं हुए। इस असफलता से वे बहुत निराश हुए और ऋषिकेश चले गए। वहाँ गुरु स्वामी शिवानंद से भेंट हुई। गुरु जी ने कहा, "जीवन में किसी एक असफलता से कभी निराश नहीं होना चाहिए। संभव है, ईश्वर ने आपको इससे बड़ा कार्य करने का अवसर प्रदान किया है। तुम पुनः प्रयास करो। सफलता तुम्हारे क़दम

चूमेगी।" फिर तो उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में अपना भविष्य चुना। हालाँकि वैज्ञानिक जीवन में डॉ. कलाम जी को कई बार असफलताएँ भी मिलीं, किंतु उन्होंने कभी हार नहीं मानी, बल्कि उनसे सीखकर नए विकल्प तैयार किए, जो अंततः उन्हें 'भारत का मिसाइल मैन' और राष्ट्रपति पद तक ले गया। दरअसल, उनकी सोच, उनके सपने बड़े होते थे, सपने को लेकर वे कहते थे, "सपने वे नहीं, जो नींद में आते हैं, सपने वे हैं जो आपको सोने नहीं देते।"

तो बच्चो, आज हमने पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन डॉ. अब्दुल कलाम जी के बारे में जाना, हमने यह भी जाना कि निरंतर प्रयास से एक ग़रीब घर का बेटा अपनी योग्यता के कारण महान वैज्ञानिक बन जाता है। उन्होंने देश के रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार तथा रक्षा-अनुसंधान और विकास-विभाग में सचिव की हैसियत से काम किया। वे टेक्नॉलॉजी, इंफॉर्मेशन, फ़ोरकास्टिंग तथा एसेसमेंट काउंसिल (TIFAC) के अध्यक्ष भी रहे।

वे आजीवन अविवाहित रहे। सरल-सहज व्यक्तित्व के धनी डॉ. कलाम को बच्चों से बहुत प्यार था। वे उनसे सीधे संवाद करते थे। 27 जुलाई, 2015 को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम मेघालय शिलॉग के आई.आई.एम कॉलेज के छात्रों को संबोधित कर रहे थे। विषय बहुत गम्भीर था, 'एक रहने योग्य ग्रह पृथ्वी का निर्माण', इसी दौरान उनको अचानक हृदयाघात हुआ और फिर विभिन्न जटिल प्रश्नों को हल करने वाले महान वैज्ञानिक ने उस दिन अंतिम साँस ली। वे देश के लिए हमेशा एक शिक्षक के रूप में याद किए जाने की इच्छा रखते थे, और अपने अंतिम क्षणों में भी ज्ञान बाँटते हुए ही इस दुनिया से अलविदा हुए। सबके प्रेरणा-स्रोत डॉ. कलाम अपने विभिन्न अनुसन्धानों के कारण सदैव याद किए जाएँगे। बच्चों ने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं। इसी के साथ विज्ञान-सभा समाप्त हो गई।

# सच है, विपत्ति जब आती है

सच है, विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है,
शूरमा नही विचलित होते, क्षण एक नही धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते है, काँटों में राह बनाते हैं।

मुख से न कभी उफ़ कहते है, सकट का चरण न गहते है,
जो आ पड़ता सब सहते हैं, उद्योग-निरत नित रहते हैं,
शूलों का मूल नसाने को, बढ़ खुद विपत्ति पर छाने को।

है कौन विघ्न ऐसा जग में, टिक सके वीर मर के मग में
खम ठोंक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़,
मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर, है छिपे मानवों के भीतर,
मेहदी में जैसे लाली हो वर्तिका-बीच उजियाली हो।
बत्ती जो नहीं जलाता है, रोशनी नहीं वह पाता है।

पीसा जाता जब इक्षु दण्ड, झरती रस की धारा अखण्ड,
मेहदी जब सहती है प्रहार, बनती ललनाओं का सिंगार,
जब फूल पिरोये जाते हैं, हम उनको गले लगाते है।

वसुधा का नेता कौन हुआ? भूखण्ड-विजेता कौन हुआ?
अतुलित यश क्रेता कौन हुआ? नव-धर्म प्रणेता कौन हुआ?
जिसने न कभी आराम किया, विघनों में रहकर नाम किया।

जब विघ्न सामने आते हैं, सोते से हमें जगाते हैं,
मन को मरोड़ते हैं पल-पल, तन को झँझोरते हैं पल-पल
सत्पथ की ओर लगाकर ही, जाते हैं हमें जगाकर ही।

वाटिका और वन एक नहीं, आराम और रण एक नहीं
वर्षा, अंधड़, आतप अखंड, पौरुष के हैं साधन प्रचण्ड
वन में प्रसून तो खिलते हैं, बागों में शाल न मिलते हैं।

कङ्करियाँ जिनकी सेज सुघर, छाया देता केवल अम्बर,
विपदाएँ दूध पिलाती हैं, लोरी आँधियाँ सुनाती हैं,
जो लाक्षा-गृह में जलते हैं, वे ही शूरमा निकलते हैं।

बढ़कर विपत्तियों पर छा जा, मेरे किशोर! मेरे ताजा!
जीवन का रस छन जाने दे, तन को पत्थर बन जाने दे
तू स्वयं तेज भयकारी है, क्या कर सकती चिनगारी है?

# अहंकार का अंत

बहुत समय पहले लंका का राजा रावण अपने बल, बुद्धि और वैभव के लिए प्रसिद्ध था। वह महान विद्वान था। उसने वेदों और शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया था। भगवान शिव का वह परम भक्त भी था। उसकी सोने की लंका संसार में प्रसिद्ध थी। उसके पास अपार धन-संपत्ति, शक्तिशाली सेना और अनेक विद्वान मंत्री थे।

इतनी खूबियों के बावजूद रावण के भीतर एक बहुत बड़ी कमजोरी थी—उसका अहंकार। उसे अपने ज्ञान, शक्ति और सामर्थ्य पर बहुत घमंड था। वह स्वयं को सबसे श्रेष्ठ मानता था और किसी की बात सुनना पसंद नहीं करता था। यही अहंकार उसके विनाश का कारण बना।

एक दिन रावण ने छलपूर्वक माता सीता का हरण कर लिया। उसने सोचा कि कोई भी उसका सामना नहीं कर सकता। जब भगवान राम ने सीता को वापस लौटाने का संदेश भेजा, तब भी रावण ने अपनी गलती स्वीकार नहीं की। उसके छोटे भाई विभीषण ने उसे समझाया कि किसी की पत्नी का हरण करना अधर्म है। मंदोदरी ने भी उसे सही मार्ग अपनाने की सलाह दी। परंतु रावण ने किसी की बात नहीं मानी।

रावण का अहंकार इतना बढ़ गया था कि वह अपने हितैषियों की बातों को भी अपमान समझने लगा। उसने विभीषण को राज्य से निकाल दिया। इसके बाद भगवान राम और रावण के बीच युद्ध हुआ। युद्ध में रावण के बड़े-बड़े योद्धा पराजित हो गए। अंत में स्वयं रावण भी भगवान राम के हाथों मारा गया।

रावण की हार केवल युद्ध की हार नहीं थी, बल्कि यह अहंकार, अन्याय और गलत निर्णयों की हार थी। यदि रावण समय रहते अपनी भूल स्वीकार कर लेता, तो शायद उसका विनाश न होता।

यह कथा हमें शिक्षा देती है कि चाहे व्यक्ति कितना भी शक्तिशाली और विद्वान क्यों न हो, उसे कभी अहंकारी नहीं बनना चाहिए। दूसरों की अच्छी बातों को सुनना और अपनी गलतियों को स्वीकार करना ही सच्ची बुद्धिमानी है। विनम्रता मनुष्य को महान बनाती है, जबकि अहंकार पतन का कारण बनता है।

# छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ

छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ का उद्भव 17 वीं शताब्दी में हुआ। छत्तीसगढ़ में धनी धर्मदास साहेब ने ही संत कबीर के विचारों का प्रचार-प्रसार प्रारंभ किया। धर्मदास साहेब का जन्म कसौधन वैश्य परिवार में हुआ था। उनके गुरु रूपदास जी थे। धर्मदास जी बचपन से ही मूर्ति-पूजा करते आए थे। जब वे मथुरा पहुँचे, वहाँ उन्हें एक साधु मिले। उन्होंने मूर्ति-पूजा का ज़ोरदार खंडन किया और अपनी निर्गुणधारा के विचारों को इस ढंग से रखा कि धर्मदास सुनकर दंग रह गए। उस साधु का नाम बिंदा था। वे सदगुरु कबीर दास जी के शिष्य थे। बिंदा साधु के उपदेश से प्रभावित होकर धर्मदास ने कहा, "मेरे लिए तो आप ही कबीर के रूप हैं। मैं उन्हें और आपको भिन्न नहीं मानता। धनी धर्मदास ने पूरे अंचल में संत कबीर के विचारों को फैलाने का काम किया। आगे चलकर उनका पूरा वंशज संत कबीर के विचारों को आगे बढ़ाता रहा।

इस समय दामाखेड़ा वंश-गद्दी पर प्रकाश मुनि नाम साहेब गुरुवाई कर रहे हैं। यहाँ चौका आरती का विधान है। अन्य परंपरा में चौका आरती नहीं होती। वे अपने गुरु की आरती करते हैं।

छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ गद्दी-परंपरा के अनुयायी बहुत संख्या में हैं, क्योंकि कबीर के विचारों को सबसे पहले आम जन तक वंश-गद्दी वालों ने ही पहुँचाया। आगे चलकर वंश-परंपरा की भी दो शाखाएँ हो गईं।

सन् 1950 के आस-पास का समय उत्तर प्रदेश तथा बिहार के निर्गुण विचारधारा के संतों का आगमन छत्तीसगढ़ में हुआ। वे कबीर के विचारों को पूरे छत्तीसगढ़ में फैलाकर चले गए। इसी समय बुरहानपुर, मध्यप्रदेश के कबीर आश्रम के प्रमुख संत श्री रामस्वरूप साहेब, कबीर मंदिर बडहरा, उत्तर प्रदेश के प्रमुख संत रामसूरत साहेब यहाँ आकर कुछेक स्थान पर उपदेश दिया करते थे। बाद में संत रामसूरत जी ने अयोध्या में अपना आश्रम स्थापित कर लिया। श्री रामसूरत साहेब के प्रमुख शिष्य श्री अभिलाष दास साहेब हुए, जो अत्यंत मेधावी और प्रखर वक्ता थे।

अभिलाष दास साहेब की शिक्षा न के बराबर थी। उनके पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उन्हें बार-बार पुलिस पकड़कर ले जाती थी और अभिलाष दास को अपना घर सँभालना पड़ता था, इसलिए वे स्कूल नहीं जा पाते थे। किसी तरह उन्होंने प्राथमिक शिक्षा पूरी की।

अभिलाष दास जी का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और वे कर्मकांड पर पूर्ण विश्वास रखते थे। माथे पर चंदन और सिर पर मोटी चोटी रखते थे। उनके गाँव के कसाई जाति के लोग कबीर के विचारों से प्रभावित थे। वे अकसर अभिलाष दास पर व्यंग्य किया करते थे और कहते थे, "पंडित जी, जब कबीर जी के विचार जानेंगे, तो ये सब कर्मकांड भूल जाएँगे" लेकिन वे कबीर के विचारों को ठीक से बता नहीं पाते थे।

संयोग से एक दिन रामसूरत साहेब उनके घर पहुँचे। बातों ही बातों में उन्होंने कबीर के विचारों को जाना। अभिलाष दास साहेब को यह विचार कारगर लगा और उन्होंने अयोध्या जाने का निश्चय किया। एक दिन वे चुपचाप घर-परिवार को छोड़कर सदा के लिए अपने गुरु रामसूरत की शरण में चले गए। परिवार जनों के द्वारा उन्हें घर लौट आने के लिए मनाने की हर- संभव कोशिश की गई, लेकिन वे अपनी आस्था से टस-से-मस नहीं हुए। अभिलाष दास साहेब ने 100 से अधिक किताबें लिखीं। उन्होंने कलकत्ता के एक भक्त प्रेम प्रकाश के आग्रह पर सन् 1970 में 'पारख प्रकाश' नाम से त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया। यह पत्रिका इलाहाबाद से आज भी निरंतर निकल रही है।

अभिलाष दास साहेब की ख्याति जन-जन तक पहुँच गई। भक्तों के द्वारा उनके कार्यक्रम की माँग अत्यधिक बढ़ गई। इस पर निर्णय लिया गया कि अक्टूबर में इलाहाबाद में होने वाले वार्षिक अधिवेशन के समय को छोड़कर पूरे सालभर का कार्यक्रम तय कर लिया जाए। अभिलाष दास साहेब साल भर घूम-घूमकर प्रवचन किया करते थे। उनके ज्ञान और व्यवहार के कारण उन्हें कबीर अनुयायियों से बहुत सम्मान मिला। संत कबीर के बाद उनके विचारों को आम जनता तक प्रभावी पहुँचाने में अभिलाष दास के बाद दूसरे कोई संत नहीं हुए। अभिलाष दास जी कबीर पंथी भक्तों के बीच बेहद लोकप्रिय हुए। यद्यपि वे आज नहीं हैं, लेकिन उनके विचार आज भी जन-मानस में हैं। अब उनके वरिष्ठ शिष्य श्री धर्मेन्द साहेब जी कबीर के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में लगे हुए हैं। अभिलाष दास साहेब के एक और शिष्य गुरुभूषण साहेब हैं। उन्होंने इसी उद्देश्य को लेकर सूरत (गुजरात) में अपना आश्रम स्थापित किया है।

छत्तीसगढ़ में विरक्त संतों के कई आश्रम हैं, जहाँ से कबीर विचारों का प्रचार-प्रसार अब भी हो रहा है। इनमें नवापारा-राजिम प्रमुख है। राजिम-नवापारा आश्रम में

हर वर्ष वर्षा ऋतु में सात दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन होता है। इलाहाबाद और सूरत के कबीर आश्रम में भी ध्यान शिविर का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त कदरीभदर में भी कबीर पंथी संतों का आश्रम है। महिला साधकों के लिए पोटियाडीह (धमतरी) में भी आश्रम है जहाँ वे त्यागमय जीवन जीती हैं। यहाँ पुरुष संत भक्तों को रात्रि में रुकने की अनुमति नहीं है।

भारत भर में कबीर पंथी संत-भक्तों में दो तरह की मान्यताएँ हैं। एक अपने को पारखी कहता है। उनका मानना है कि कबीर भी माता-पिता की संतान है। वहीं दूसरा वर्ग मानना है कि कबीर परमात्मा के अवतार हैं और वे आकाश मार्ग से आकर लहरतारा में कमल-फूल पर शिशु रूप में प्रकट हुए।

कबीर की दृष्टि में जाति-पाति से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। मनुष्य को उसका सदगुरु और कर्म बड़ा बनाता है। कबीर ने जीवनभर समाज में व्याप्त अंधविश्वास और गलत मान्यताओं विरुद्ध संघर्ष किया। उन्होंने कहा है, -

"हिन्दू कहूँ तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहि।
पंचतत्त्व का पूतला, गैबी खेले माहि।"

कबीर कहते हैं कि आत्मा न हिंदू है, न मुसलमान, यह एक दिव्य इकाई है, जो शरीर में खेलती है। कबीर के ह्रदय में प्राणिमात्र के लिए दया और करुणा थी। हम गर्व से कह सकते हैं, छत्तीसगढ़ में कबीर पंथी भक्तों की संख्या बहुत अधिक है। चाहे वे वंश-गद्दी-परंपरा से जुड़े हों या फिर विरक्त पंथ को मानने वाले हों।

# छत्तीसगढ़ में पारंपरिक देहालेखन : गोदना

छत्तीसगढ़ की परंपराओं में देहालेखन की एक समृद्ध परंपरा है। गोदना गुदवाना, माहूर, मेंहदी, बिंदी, सिंदूर आदि लगाना देहालेखन की परंपराओं में दिखाई देता है। छत्तीसगढ़ के अलग-अलग क्षेत्रों में इन परंपराओं में अंतर देखा जा सकता है जो वैयक्तिक, जातीय और क्षेत्रीय भिन्नता का द्योतक है। देहालेखन की परंपराओं में गोदना का महत्वपूर्ण स्थान है।

गोदना गोदवाने का प्रचलन छत्तीसगढ़ के अतिरिक्त अन्य प्रांतों में भी देखा जाता है। विशेष रूप से यह आदिवासी संस्कृति की एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रथा है। गोदना में जातीय संदर्भ भी देखा जा सकता है। गोदना की आकृति और देह में गोदना के स्थान को देखकर जाति-विशेष के संबंध में जाना जा सकता है। आदिवासी समुदाय में यह बहुत पहले से प्रचलित है। बैगा आदिवासी अत्यधिक गोदना-प्रिय होते हैं। पूरी देह गोदना से अलंकृत होती है। गोदना का प्रचलन क्यों और कैसे हुआ, यह तो नहीं कहा जा सकता, किंतु गोदना पर कई लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। इन लोक-कथाओं से भी गोदना गोदवाने की परंपरा के विकास की जानकारियाँ मिलती हैं। इस

संदर्भ में एक प्रचलित माड़िया लोक-कथा इस प्रकार है -

प्राचीन काल की बात है। एक समय यमराज को मृत्युलोक में स्त्री-पुरुषों को पहचानने में असुविधा होती थी। एक दिन उसके पुत्र और पुत्रवधू कहीं जाने के लिए तैयार होकर यमराज से अनुमति लेने पहुँचे। उसने देखा कि उसकी पुत्रवधू अपनी देह पर बेल-बूटे बनाए हुए है। यह देखकर कर यमराज ने सोचा- "क्यों न स्त्रियों की देह पर इसी तरह बेल-बूटे बना दिए जाएँ?" तब उन्होंने अपने पुत्र और पुत्रवधू को पृथ्वी लोक की स्त्रियों की देह पर पहचान बनाने के लिए बेल-बूटे बनाने के लिए भेजा, जिससे स्त्रियों को सहजता से पहचाना जा सके। यमराज के पुत्र और पुत्रवधू ने पृथ्वी-लोक में आकर बेल-बूटे बनाने का कार्य आरंभ किया। बेल-बूटों ने कालांतर में 'गोदना' का स्वरूप ले लिया। तब से स्त्रियाँ अपनी देह पर गोदना गुदवाती हैं।

छत्तीसगढ़ में एक किवदंती यह भी प्रचलित है कि मनुष्य की मृत्यु के बाद उसकी सारी चीज़ें यहीं रह जाती हैं। एक धागा भी साथ नहीं जाता, किंतु गोदना मृत्यु के बाद भी साथ जाता है। यही कारण है कि इसका सामाजिक और धार्मिक महत्त्व भी है। एक मान्यता यह भी है कि गोदना स्वर्ग में व्यक्ति की पहचान कायम रखता है। जो गोदना नहीं गुदवाते, उसे भगवान के दरबार में स्थान नहीं मिलता।

गोदना की प्रक्रिया का विश्लेषण करने से दो बातें उभरकर आती हैं- (1) सौंदर्य-बोघ (2) एक्यूप्रेशर के माध्यम से शारीरिक स्वास्थ्य।

मनुष्य स्वभाव से ही सौंदर्य-प्रेमी होता है। यही कारण है कि वह हमेशा सजता-सँवरता है। यह प्रवृत्ति स्त्रियों में विशेष रूप से देखी जाती है। भारतीय स्त्रियाँ अत्यधिक सौंदर्य-प्रिय होती हैं। वे सदैव शृंगार करना चाहती हैं। वे सिर-से-पैर तक तरह-तरह के आभूषणों से अंलकृत रहती हैं। गोदना भी स्त्री देह का विशेष शृंगार है। शायद गोदना परंपरा का विकास इन्हीं

शृंगारत्मक प्रवृत्तियों के कारण हुआ हो। चूँकि यह स्थायी शारीरिक शृंगार होता है इसलिए इसके प्रति विशेष लगाव होना स्वाभाविक है।

एक्यूप्रेशर प्राचीन काल से ही शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अनेक तरह से उपयोगी रहा है। जब शरीर पर कहीं दर्द होने लगता था तब उस स्थान को 'आँका'(दागा) जाता था। आँकने से उस स्थान की पीड़ा समाप्त हो जाती थी। छत्तीसगढ़ में हँसिए को गर्म कराया व बेर के काँटे से दागने की परंपरा प्रचलित थी।

देवार समाज की महिलाएँ और पुरुष भी गाँव-गाँव जाकर गोदना गोदने का कार्य करते थे। गोदना गोदने वाली महिलाएँ 'गोदनीन' कहलाती थीं। गोदना गुदवाने की परंपरा के दो स्वरूप दिखते हैं। पहला जातीय गोदना आकृति, दूसरा स्वैच्छिक आकृति। गोदनीनों को जातीय व्यवस्था के अनुरूप गोदना की आकृति बनाने का अच्छा ज्ञान होता था। तेली, गोंड़, कुर्मी, बिंझवार, सँवरा, बैगा, सतनामी आदि जातियों के लोग जब गोदना गुदवाते थे, तब उनकी जति के आधार पर उनके हाथ, पैर, बाँह, माथे, गाल, नाक आदि में आकृतियाँ बनती थीं। दूसरा, गोदना गुदवाने वाले की इच्छा के अनुरूप भी गोदना गोदते थे।

इच्छा-अनुरूप गोदना गुदवाने की परंपरा बहुत बाद की है, जिसमें फूल, पत्तियाँ, पशु, पक्षी के चित्र व प्रिय जन के नाम लिखवाने की परंपरा चल पड़ी। विशेष कर महिलाएँ अपने पति व प्रेमी के नाम लिखवाती थीं। धीरे-धीरे पुरुष भी अपने शरीर में गोदना गुदवाने लगे। पुरुषों द्वारा गोदना गुदवाना पूर्णतः स्वैच्छिक ही था। पुरुष खास कर वीरोचित चिह्न बनवाते थे, जिनमें प्रमुख रूप से हनुमान, शिव, सिंह, बिच्छु या साँप होता था। इसके अतिरिक्त वे अपने किसी आत्मीयजन अथवा इष्टदेव का नाम लिखवा लेते थे। छत्तीसगढ़ में 'मितान' बहुत ही आत्मीय रिश्ता होता है। पुरुष खासकर अपने मितान, महाप्रसाद, तुलसीदल, गंगाबारू आदि के नाम लिखवाया करते थे। रामनामी समाज के लोग अपने पूरे शरीर में राम-राम लिखवाते थे।

इस तरह गोदना लोक की एक गौरवशाली परंपरा और सुंदर कलाकृति है, जो लोक-जीवन से जुड़ी हुई है। इसमें सौंदर्य और आत्मिक सोच समाई हुई दिखती है। इसमें रोचकता के साथ-साथ विविधता भी है। सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं से युक्त गोदना की यात्रा-कथा बहुत प्राचीन लगती है। आगे चलकर गोदना गोदवाना अत्यन्त प्रिय परंपरा बन गई और संस्कृति के एक अंग के रूप में प्रतिष्ठित हो गई।

समय का चक्र सदैव चलता रहता है। आज इसी गोदना ने अब 'टैटू' का रूप ले लिया है। भारत में ही नहीं, विदेशों में भी इसका काफी प्रचलन है। अब भारतीय बच्चे इसकी नक़ल करने में लगे हुए हैं। अब कोई देवार या देवारिन गाँव-गाँव आकर गोदना गीत गाते हुए गोदना नहीं गोदती। बल्कि अब शहरों में इसके लिए एअर कंडीशनर 'टैटू' पार्लर खुल गए हैं, जहाँ आधुनिक तकनीकों से टैटू बनाए जा रहे हैं। एक समय ऐसा था, जब एक गोदना के चिह्न को मिटाने के लिए नवयुवतियाँ सर्जरी करा लिया करती थीं, वे ही अब पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में शामिल हो गई हैं।

# कौआ और रानी

बहुत पुरानी बात है। विजयनगर के राजा-रानी के कोई संतान नहीं थी। रानी उदास रहा करती थी। रानी की उदासी राजा से देखी नहीं गई। एकदिन राजा रानी का दिल बहलाने के लिए राजा एक कौआ ले आया।

कौए का रंग उस समय पूरा सफेद हुआ करता था और उसकी बोली तोता और मैना की तरह मधुर होती थी। वह आदमी की आवाज की हु-ब-हू नक़ल करता था। कौए को इंसानों की आवाज़ में बोलता देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुई। वह अब खुश रहने लगी। उसे मनोरंजन का एक अच्छा साधन मिल गया था। वह उस कौए के क्रियाकलाप की तारीफ़ करते नहीं थकती थी।

उसी समय राज्य में युद्ध छिड़ गया। राजा को युद्ध में जाना पड़ा। राजा के न होने से रानी अपना सारा समय कौए के साथ बिताती थी। इससे कौए के मन में घमंड आ गया। उसे लगने लगा, रानी मेरे बिना नहीं रह सकती। रानी की अनुपस्थिति में वह उसकी ही बुराई करने लगा। कभी-कभी तो वह दास-दासियों से भी रानी की निंदा करने में संकोच नहीं करता था। धीरे-धीरे कौए की करतूत रानी तक पहुँचने लगी। उसका मन हुआ कि कौए को भगा दिया जाए, किंतु राजा को क्या जवाब देगी, यह सोचकर वह चुप रह जाती थी।

कुछ दिन के बाद युद्ध खत्म हो गया। राजा जब लौटकर आया तो रानी कहीं गई हुई थी। कौए को मौक़ा मिल गया।

वह राजा को रानी के विरुद्ध भड़काने लगा। राजा के मन में भी रानी के प्रति खटास आने लगी।

राजा को देखकर रानी अत्यंत प्रसन्न हुई। उसने राजा से प्यार जताया, किंतु राजा ने उसकी उपेक्षा कर दी। रानी समझ गई, यह सब कौए की ही करतूत है।

रानी ने कौए से कहा- "तू क्यों मेरे पीछे पड़ा है। मुझसे किस जनम की दुश्मनी निकाल रहा है।"

कौए ने खुश होकर कहा- "मुझे तुम्हें परेशान करने में मज़ा आता है। अभी तो, राजा को मैं और भड़काऊँगा, तब देखना।"

राजा दरवाज़े की ओट से रानी और कौए की बातें सुन रहा था। उसे असलियत का पता चल चुका था।

वह अत्यंत कोधित हुआ। यह कौआ उसके और रानी के बीच में फूट डाल रहा है। उसने सैनिकों को तत्काल आदेश दिया- "कौए की जीभ काट दी जाए और उसका शरीर काले रंग से रंगकर देश से बाहर कर दिया जाए।" कौआ रो-रोकर माफ़ी माँगता रहा, परंतु राजा ने उसकी एक न सुनी। कौए को उसकी करनी की सज़ा मिल गई।

तब से कौए का रंग काला और आवाज़ कर्कश हो गई। वह काँव-काँव करता हुआ, इधर-उधर घूम-घूमकर सबसे माफ़ी माँगता है।

# ऐसा था इनका बचपन – महापुरुषों की कहानियाँ

बच्चो, समय हमेशा चलता ही रहता है, कभी नहीं रुकता। हमारे जीवन का चक्र भी ठीक वैसे ही घूमता रहता है। पहले हम छोटे-छोटे नन्हे बच्चे होते हैं फिर धीरे-धीरे बड़े होते जाते हैं। जीवन के इस क्रम में अनेक घटनाएँ घटती रहती हैं, लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो हमारे जीवन पर विशेष प्रभाव छोड़ जाती हैं या यूँ कहें कि उससे हमारा जीवन ही बदल जाता है।

बच्चो, ऐसे कितने महान लोग हुए जिन्होंने न सिर्फ़ देश में बल्कि विदेशों में भी अपना नाम कमाया। आज हम ऐसी ही कुछ महान विभूतियों के बचपन के बारे में जानेंगे -

- **स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति - डॉ.राजेन्द्र प्रसाद -**

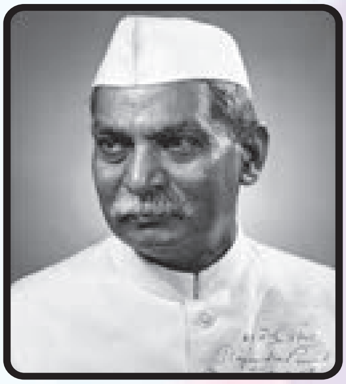

यह उन दिनों की बात है, जब स्कूल के प्रधानाध्यापक परीक्षा फल सुनाने के लिए खड़े हुए। उन्होंने सभी विद्यार्थियों के नाम लिए, लेकिन एक विद्यार्थी का नाम नहीं आया। उसने खड़े होकर कहा , "श्रीमान, मेरा नाम तो नहीं बोला गया।" इस पर अध्यापक बोले, "तुम जरूर फेल हो गए होगे। तभी तुम्हारा नाम लिस्ट में नहीं है।" असल में, परीक्षा से पूर्व वह बालक मलेरिया से पीड़ित था। लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा कि मेरा नाम तो इसमें होना ही चाहिए। अब अध्यापक को भी गुस्सा आ गया। उन्होंने उससे कहा, "तुम जितनी बार बोलोगे, उतना ही तुम्हें जुर्माना देना पड़ेगा।" लेकिन वह बच्चा बोलता ही रहा कि इसमें मेरा नाम तो होना चाहिए। जुर्माने की राशि 5 रूपये से 50 रूपये तक पहुँच गई। बात जब बढ़ रही थी, तभी लिपिक दौड़ता हुआ आया और उसने प्रधानाध्यापक को बताया कि उससे ग़लती हुई है। असल में, यह बालक कक्षा में प्रथम स्थान पर है। पता है ये बालक थे - राजेन्द्र प्रसाद, जो आगे चलकर स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने।

- **लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल -**

एक ऐसा ही क़िस्सा लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का है। बचपन में एक बार उन्हें चोट लग गई। वहाँ एक घाव बन गया और अनेक घरेलू उपचार करने पर भी

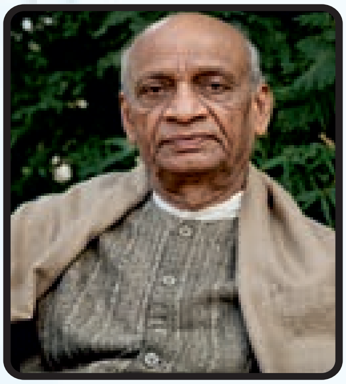

वह घाव ठीक ही नहीं  हो रहा था। अंत में एक वैद्य को दिखाया गया। वैद्य ने कहा कि अगर हम इस घाव पर लोहे को गर्म करके रखेंगे तो यह ठीक हो जाएगा। घर के सभी सदस्य तो डर गए, लेकिन बालक वल्लभ ने हिम्मत नहीं हारी। वह सीधे लुहार के पास गया और उससे कहा कि गर्म-गर्म लोहा घाव पर लगा दे। लुहार ने यह सोच कर मना कर दिया कि बहुत दर्द होगा और यह तो अभी बच्चा है। वल्लभ ने दो-तीन जगह और पूछा लेकिन सभी ने गर्म लोहा घाव पर रखने से मना कर दिया। तब उस बालक ने बड़े साहस से गर्म लोहे की सलाख उठाकर अपने घाव पर रख दी। इस बालक के साहस को देख कर सभी हैरान रह गए। यही बालक आगे चलकर प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी बने। वे  स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री तथा उप-प्रधानमंत्री बने।

- **गोपाल कृष्ण गोखले -**

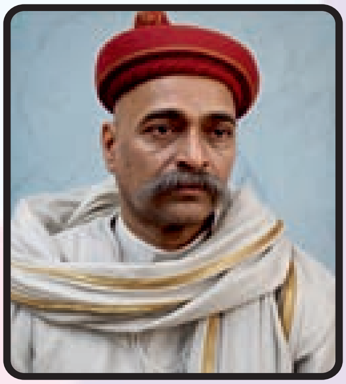

यह बात उन दिनों की है, जब गोपाल विद्यालय पढ़ने जाते थे। आचार्य जी ने उन्हें गणित का गृह कार्य करने को दिया। बालक गोपाल ने एक-दो प्रश्नों के अलावा सभी हल कर लिए। जो सवाल हल नहीं हुए थे, उन्हें गोपाल ने अपने दोस्तों से पूछकर हल कर लिए। अगले दिन विद्यालय में आचार्य जी ने जब देखा कि गोपाल के सभी सवाल सही हैं, तो उन्होंने बालक गोपाल की बहुत प्रशंसा की। इस पर गोपाल रोने लगे और पूछने पर उन्होंने सारी बातें सच-सच बता दीं  कि ये उन्होंने स्वयं नहीं किए हैं, मित्र की सहायता से किए हैं। इस पर अध्यापक बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने सच बोलने पर बालक को शाबाशी दी। आगे जाकर यही गोपाल कृष्ण गोखले महान देशभक्त और महात्मा गाँधी के राजनैतिक गुरु भी बने।

- **शहीद भगत सिंह -**

कहते हैं "पूत के पाँव पालने में ही दिखाई पड़ जाते हैं।"

पाँच वर्ष की बाल्यावस्था में ही भगत सिंह के खेल भी अनोखे थे। वे अपने साथियों को दो टोलियों में बाँटकर एक-दूसरे पर आक्रमण करके युद्ध का अभ्यास किया करते थे। भगतसिंह के हर कार्य में वीर-धीर और निर्भीक होने का संकेत मिलता था।

एक बार सरदार किशन सिंह इस बालक को लेकर अपने मित्र श्री नंद किशोर मेहता के पास उनके खेत पर गए। दोनों मित्र बातों में लग गए और बालक भगत सिंह अपने खेल में लग गए।

नंद किशोर मेहता का ध्यान भगत सिंह के खेल की ओर आकृष्ट हुआ। भगत सिंह मिट्टी के ढेरों पर छोटे-छोटे तिनके लगाए जा रहे थे।

उनके इस कार्य को देखकर नंद किशोर मेहता बड़े स्नेह भाव से बालक भगत सिंह से बातें करने लगे-

"तुम्हारा नाम क्या है ?" श्री नंद किशोर मेहता ने पूछा।

बालक ने उत्तर दिया-"भगत सिंह।" "तुम क्या कर रहे हो ?" "मैं बंदूकें बो रहा हूँ।"

बालक भगत सिंह ने बड़े गर्व से उत्तर दिया।

"बंदूकें...?"

"हाँ, बंदूकें।"

"वह क्यों ?"

"अपने देश को स्वतंत्र कराने के लिए।"

श्री नंद किशोर मेहता राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उन्होंने बालक भगत सिंह को बड़े स्नेहपूर्वक अपनी गोद में उठा लिया। मेहता जी उसकी बातों से अत्यधिक प्रभावित हुए और सरदार किशन सिंह से बोले, "भाई ! तुम बड़े भाग्यवान् हो, जो तुम्हारे घर में ऐसे होनहार व विलक्षण बालक ने जन्म लिया है।

# अब तक सुमनों पर चलते थे

अब तक सुमनों पर चलते थे,
अब काँटों पर चलना सीखें ॥
खड़ा हुआ है अटल हिमालय,
दृढ़ता का नित पाठ पढ़ाता ;
बहो निरंतर ध्येय-सिंधु तक,
सरिता का जल-कण बतलाता ;
अपने दृढ़ निश्चय से पथ की
बाधाओं से लड़ना सीखें ॥ 1 ॥

अपनी रक्षा आप करे जो,
देता उसका साथ विधाता :
अन्यों पर अवलंबित है जो,
पग-पग पर वह ठोकर खाता;
जीवन का सिद्धांत अमर है,
उस पर हम नित चलना सीखें ॥ 2 ॥

हम में चपला-सी चंचलता,
हम में मेघों का गर्जन है;
हम में पूर्ण चंद्रमा-चुम्बी
सिंधु-तरंगों का नर्तन है;
सागर-से गंभीर बनें हम,
पवन-समान मचलना सीखें ॥ 3 ॥

उठें-उठें ! अब अंधकारमय
जीवन-पथ आलोकित कर दें;
निविड़-निशा के गहन तिमिर को
मिटा आज जग ज्योतित कर दें;
तिल-तिल कर अस्तित्व मिटा दें,
दीपशिखा-सम जलना सीखें ॥ 4 ॥

# एक राष्ट्रवादी चिंतक: पंडित दीनदयाल उपाध्याय

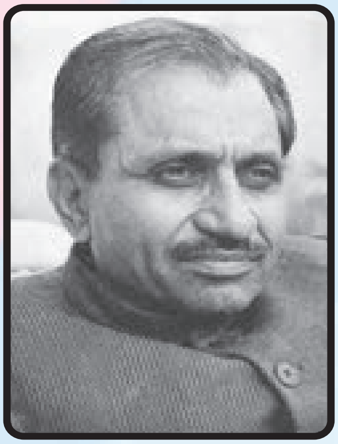

स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी के विचारों के संपोषक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के विचार को आगे बढ़ाने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्र और समाज के संबंध में व्यापक और उदार दृष्टिकोण रखते थे। वे पूँजीवाद और समाजवाद की जगह स्वराज की अवधारणा पर विश्वास रखते थे तथा गाँधी जी द्वारा परिकल्पित नैतिक मूल्यों और लोक व्यवहार के आधार पर आर्थिक नीतियों को अपनाने पर बल देते थे। वे राजनीति को जनसेवा का माध्यम मानते थे। उनका कहना था कि राजनैतिक व्यक्ति को जनसेवक के रूप कार्य करना चाहिए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर, 1916 को धनकिया नामक स्थान पर (जयपुर, अजमेर रेलवे लाइन के पास) राजस्थान में अपने ननिहाल में हुआ था। उनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय तथा माता का नाम रामप्यारी था। उनके नाना रेलवे में जलेसर रोड स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर थे। माता धर्मपरायण कुशल गृहिणी थीं। उनके पिता ज़िला मथुरा के ग्राम नगला चंद्रभान, उत्तर प्रदेश के निवासी थे।

दीनदयाल उपाध्याय का बचपन एक सामान्य उत्तर भारतीय परिवार में बीता। वे जब केवल तीन वर्ष के भी नहीं हुए थे, उनके पिता का देहावसान हो गया। पिता की मृत्यु के कुछ वर्ष पश्चात् माता रामप्यारी का भी निधन हो गया, तब बालक दीनदयाल मात्र सात वर्ष के थे। उनकी बाल्यावस्था संघर्षपूर्ण रही। संयुक्त परिवार होने के कारण संसाधनों का पूर्णत: अभाव था, जिसका प्रभाव दीनदयाल के बालमन पर पड़ना स्वाभाविक था, लेकिन वे विपरीत परिस्थितियों से भी ऊर्जा ग्रहण कर अपने व्यक्तित्व को निखारते रहे।

दीनदयाल उपाध्याय की प्रारंभिक शिक्षा और परवरिश उनके ननिहाल में हुई। वे मेधावी छात्र थे। आठवीं की बोर्ड परीक्षा में वे न केवल प्रथम श्रेणी से

उत्तीर्ण हुए, बल्कि ज़िले में सर्वप्रथम रहे। इस हेतु सीकर के महाराजा कल्याण सिंह ने उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया और दस रुपए मासिक छात्रवृत्ति और पुस्तक आदि के लिए दो सौ पचास रुपए का पारितोषिक भी प्रदान किया। वे इंटरमीडिएट परीक्षा में भी प्रथम रहे, इससे प्रभावित होकर उद्योगपति घनश्याम दास बिड़ला ने भी उपरोक्तानुसार राशि प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। 1939 में कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज से बी०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्होंने एम०ए० करने के लिए सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा में प्रवेश लिया और पूर्वार्द्ध में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए, लेकिन बीमार बहन रामादेवी की सेवा-शुश्रूषा में लगे रहने के कारण उत्तरार्द्ध न कर सके। बहन की मृत्यु ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। मामाजी के बहुत आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक परीक्षा दी, उत्तीर्ण भी हुए, बल्कि उनके भीतर की राष्ट्रीयता ने उन्हें अँग्रेज़ सरकार की नौकरी करने की इजाज़त नहीं दी। यह उनके स्वाभिमान व देश-प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है। उन्होंने 1941 में प्रयाग से बी०टी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। बी०ए० और बी०टी० करने के बाद भी उन्होंने नौकरी नहीं की। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज सेवा, मानव सेवा व राष्ट्र सेवा के लिए अर्पित कर दिया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय दृढ़-संकल्पी व्यक्ति थे। उनका जीवन उच्च विचारों से आप्लावित था। वे योग्य संगठक, विचारवान लेखक, निरपेक्ष पत्रकार और राष्ट्रवादी चिंतक के रूप में जाने जाते थे। एक उत्कृष्ट मानवतावादी होने के नाते सामाजिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत जीवन में सबसे कमज़ोर और सबसे ग़रीब व्यक्ति की चिंता करते थे। ग़रीबों की सेवा को माँ भारती की सेवा मानते थे। इसी अंतर्भाव को लेकर उनमें जबरदस्त उत्साह और दृढ़ विश्वास था। उन्होंने अपने दो दशकों के अध्ययन और अनुभव के बाद अपनी विचारधारा को एकात्म मानववाद का नाम दिया और अपने विचारों में समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक तत्त्वों से ज़्यादा नीति-शास्त्र को महत्व दिया। उनका मानना था कि भारत का बहुलतावादी चरित्र

अपनी राष्ट्रीय एकता को तभी बनाए रख सकता है, जब देश में लोकतंत्र रहे। उनके राष्ट्रवाद ने ही उन्हें लोकतंत्रवादी बनाया।

दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की विकृति के प्रति सचेत थे और भारतीय संस्कृति को विकृत होने से बचाना चहते थे। उनका कहना था- "हमारा ध्येय संस्कृति का केवल संरक्षण नहीं, बल्कि उसे गति देकर सजीव और सक्षम बनाना है।" वे भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रचारक थे। उनका सूत्र था- "हम मानव के ज्ञान और उपलब्धि को संकलित करें। इन तत्वों को, जो हमारा है, उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकूल ढालकर हम आगे चलने का विचार करें।"

दीनदयाल उपाध्याय जी के दर्शन का सार तत्त्व था "वैश्विक ज्ञान और आज तक की हमारी संपूर्ण सांस्कृतिक परंपरा को समेकित कर, हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली होगा। जिसमें जनमा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ संपूर्ण मानवता के साथ एकात्मता का साक्षात्कार कर नर से नारायण बनने में समर्थ हो सकेगा।" उनका आर्थिक सशक्तीकरण पर स्पष्ट विचार था कि स्वदेशी और लघु उद्योग भारत की आर्थिक योजना की आधारशिला होनी चाहिए, जिसमें सद्भाव, संस्कृति, राष्ट्रीयता और अनुशासन का समावेश हो। उन्होंने अपने आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना में स्वदेशी को प्राथमिकता दी, लेकिन वैश्विक नवाचारों को अपनाने के कतई खिलाफ नहीं थे। वे प्राकृतिक खेती के कद्रदान थे। उनका मानना था कि प्राकृतिक खेती से किसानों की आय बढ़ेगी और वे समृद्ध होंगे। वे केवल आर्थिक समीक्षक ही नहीं थे, वरन् आर्थिक चिंतक भी थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रवादी विचार और अंत्योदय की अवधारणा से भारत को विश्वगुरु बनने का सम्मान दिलाना चाहते थे। सब के लिए शिक्षा, हर हाथ को काम और हर खेत को पानी उनके विचारों के मूल में थे। उनके इसी उदार दृष्टिकोण ने ही राष्ट्र के लिए एक लोकतांत्रिक आर्थिक

व्यवस्था में आत्मनिर्भर होने का मार्ग प्रशस्त किया है। वे एक ऐसी व्यवस्था के विरोधी थे, जो रोज़गार के अवसर को कम करती है, जो समाज में असहिष्णुता का फैलाव करते हैं और जो पूँजी और सत्ता पर एकाधिकार रखने के पक्षधर हैं। स्वतंत्रता, समानता और न्याय की गारंटी देने वाली भारतीय संस्कृति पर उनका विचार बिलकुल स्पष्ट था।

भारतरत्न, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने सुशासन के लक्ष्य को आगे बढ़ाने और ग्रामीणों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने में दीनदयाल उपाध्याय जी के पदचिह्नों का अनुसरण किया। उनका मत था कि हम किसी विशेष समुदाय या वर्ग की नहीं, बल्कि पूरे देश की सेवा के लिए प्रतिबद्ध हैं। उनकी प्रतिज्ञा थी कि हमें हर भारतवासी को भारत माता की संतान होने पर गर्व का अनुभव कराना है। आज आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में "लोकल से वोकल" का सपना देखा जा रहा है, उसमें पंडित दीनदयाल जी के विचार पूरी तरह झलकते हैं। 11 फरवरी, 1968 की रात को मुग़लसराय रेलवे स्टेशन पर उनका असामयिक निधन हो गया।

महामानव पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी आज हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उनके प्रखर विचार, मानवतावादी दृष्टिकोण और राष्ट्रीयता का मूलमंत्र हमें आगे बढ़ने के लिए निरंतर प्रेरित करता है। वे नए भारत के राजनैतिक गगन पर नैतिक आदर्शों के ध्रुव तारे के समान अचल और अक्षुण्ण आभा से सदैव अमर रहेंगे।

# हमारे चारों धाम

जहाँ कर्म साक्षात् देवता,
उन्हें करें साष्टांग प्रणाम
सदियों से हैं खेत और खलिहान
हमारे चारों धाम।
जिनके बल पर हरा-भरा है,
जग का कोना-कोना
जहाँ पसीने से उगता है,
हीरा-मोती-सोना
राम-राम से जहाँ सुबह हो,
राम-राम से होती शाम।
कोई भी श्रृंगार न सूझे,
पेट अगर भूखा हो
कैसे भला पसीना निकले,
जब अंदर सूखा हो
अगर अँतड़ियाँ अकड़ रही हों,
नाम नहीं आता है काम।
पेट बड़ा हो चाहे जितना,
दो हैं हाथ हमारे
काम करें, तो पेट भरे,
फिरते क्यों मारे-मारे
खेत चलें, कर लें इस का हल,
आ कर फिर कर लें आराम।
बढ़े कारखानों की संख्या,
खेती पिछड़ न पाए
आसमान चाहे छू लें,
यह धरती बिछड़ न पाए
अच्छा सोचें-करें अगर हम,
अच्छे का अच्छा परिणाम।

# गोंडवाना मरीन फ़ासिल्स पार्क

आराध्या ने पूछा – "पिताजी! इस बार गर्मी की छुट्टियों में कहाँ जाएँगे ?"

पिताजी ने कहा – "बेटा! इस बार हम ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में आपके मामा के घर मनेन्द्रगढ़ चलेंगे।"

आराध्या ने थोड़ा सोचते हुए कहा - "ठीक है पिताजी ! पर वहाँ हमें कौन-कौन-सी जगहें देखने और घूमने के लिए मिलेंगीं? वह तो छोटा-सा शहर है।"

विकास ने मुसकराकर कहा - "बेटा! हम कश्मीर, मनाली, दिल्ली और मुंबईं जैसी बड़ी जगहें घूम चुके हैं। कभी-कभी हमें अपने आसपास के पर्यटन-स्थलों के बारे में भी जानना चाहिए। मनेन्द्रगढ़ में राम-वन-गमन पथ, सीतामढ़ी, हरचौका, अमृतधारा जलप्रपात, रमदहा जलप्रपात, रॉक पैंटिंग, सिद्ध बाबा पहाड़, जगन्नाथ मंदिर जैसे बहुत-से दर्शनीय स्थल हैं।"

मम्मी ने कहा- "बेटा! और भी बहुत-सी जगह घूमने की हैं। मामा से भी मुलाक़ात हो जाएगी और वे हमें अच्छी जगह घुमा भी देंगे।"

अगले दिन पूरा परिवार तैयार होकर मनेन्द्रगढ़ पहुँचा। बच्चों में बहुत उत्साह था। सभी आपस में बातचीत कर रहे थे। उसी बीच आराध्या ने मामा से पूछा - मामाजी! आप हम लोगों को कहाँ-कहाँ घुमाने ले जाएँगे?

मामा ने कहा - सभी तैयार हो जाओ आज ही हम लोग चलते हैं फ़ॉसिल्स पार्क। सभी उत्साहित हो गए बच्चों के साथ बड़े भी जल्दी तैयार हो गए।

मामाजी ने कहा - हसदेव नदी के किनारे स्थित है।

मामा ने कहा - "आज मैं तुम्हें एक बिलकुल अलग और अनोखी जगह दिखाने ले चलूँगा - मरीन गोंडवाना फ़ॉसिल्स पार्क। यह न सिर्फ़ छत्तीसगढ़ बल्कि पूरे एशिया का सबसे बड़ा समुद्री जीवाश्म पार्क है।"

माता–पिता ने एक साथ पूछा "यह कौन-सा पार्क है? यह तो हमें भी नहीं पता।"

आराध्या - "मामाजी! यह कौन-सा नया पार्क है?"

मामा – 'फ़ॉसिल्स' (जीवाश्म) और 'मरीन फ़ॉसिल्स' का अर्थ समुद्री जीवाश्म होता है।"

मम्मी ने आश्चर्य से पूछा - समुद्री जीवाश्म, वह भी मनेन्द्रगढ़ में? यह तो संभव नहीं लगता, मैंने तो कभी नहीं सुना।

मामा ने बताया - "आज से करोड़ों साल पहले यह इलाका समुद्र के नीचे था। समय के साथ समुद्री जीव चट्टानों में दब गए और धीरे-धीरे जीवाश्म बन गए।"

बातों-बातों में सभी मरीन गोंडवाना फ़ॉसिल्स पार्क पहुँच गए। जैसे ही वे पार्क के अंदर पहुँचे। डायनासोर व अन्य समुद्री जीव-जंतुओं के चित्र और मूर्तियाँ बनी हुई दिखाई दीं।

आराध्या ने ज़ोर से चीखकर कहा, "माँ देखो डायनासोर।"

फिर उसने कहा - "मामाजी, आप हमें घुमाते हुए सभी बात विस्तार से बताइए कि यहाँ समुद्र कब और कैसे पहुँचा तथा समुद्री जीव यहाँ कैसे आए?"

मामाजी ने बताया- 'मरीन गोंडवाना फ़ॉसिल्स की खोज वर्ष 1954 में सुकुमार घोष (कलकत्ता के) एक कोयला व्यापारी द्वारा की गई थी। कोयले की खोज के दौरान उन्होंने पत्थरों पर फॉसिल्स के चिह्न देखे।

सन 1958 में भाटिया एंड संस ने इस स्थल का निरीक्षण कर समुद्री जीवाश्म होने की पुष्टि की। वर्ष 1982 में इसे 'नेशनल जियोलॉजिकल मॉन्यूमेंट' घोषित किया गया और 'मरीन फ़ॉसिल्स' पार्क नाम रखा गया। बाद में इसका नाम परिवर्तित कर गोंडवाना मरीन फ़ॉसिल्स पार्क कर दिया गया।

2015 में बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ़ पैलियोसाइंसेज़, लखनऊ की टीम ने पुष्टि की कि पर्मियन युग में यह क्षेत्र समुद्र में डूबा हुआ था। ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र का जलस्तर बढ़ा और समुद्री जीव चट्टानों में दब गए। करोड़ों वर्षों बाद ये जीवाश्म में बदल गए। भूगर्भीय घटना के बाद जलस्तर घटने पर ये चिह्न उभरकर ऊपर आ गए।

पुनः 2021 में राज्य जैव विविधता बोर्ड के सचिव अरुण कुमार पांडेय के नेतृत्व में जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया तथा बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान, लखनऊ की

टीम, विभागाध्यक्ष रविशंकर विश्वविद्यालय की संयुक्त टीम ने शोध किया और पुष्टि की कि ये लगभग 29.3 करोड़ वर्ष पुराने समुद्री जीवाश्म हैं।

यहाँ वायुयाल्य, मोलस्का, युरीडेस्मा, एक्युलोपेक्टेन-जैसे समुद्री जीवों के अवशेष पाए गए हैं। बड़े पत्थरों को तराशकर पानी तथा एम्फीवियन के द्वारा लगभग 30 समुद्री जीवों के चित्र उकेरे गए हैं, जिन्हें खैरागढ़ विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण शिल्प कलाकार धर्म सिंह नेताम एवं मनीषा नेताम की टीम ने पत्थरों पर इन चित्रों को हूबहू, उकेरा है, जो अत्यंत आकर्षक हैं।

आराध्या बोली " अरे बाप रे।"

मामा जी ने बताया, खेमगाँव (सिक्किम), राजहरा (झारखण्ड), सुंबासीरी (अरुणाचल प्रदेश) तथा दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) मामा जी ने आगे बताया कि 14 मार्च, 2022 को छत्तीसगढ़ राज्य के वन विभाग ने इस स्थल को राज्य का पहला समुद्री जीवाश्म पार्क घोषित किया।

(पार्क घूमते समय आगे एक बिल्डिंग दिखी)

आराध्या – मामाजी, इस बिल्डिंग में क्या है?"

मामाजी "यह इंटरप्रिटेशन बिल्डिंग है, 'जहाँ समुद्री जीवाश्म के अवशेष तथा अन्य बहुत-सी जानकारियाँ प्रदर्शित की गई हैं। चलो! देखते हैं।

आराध्या ने कहा - और क्या देखने लायक है मामाजी, यहाँ?

मामाजी ने कहा- यह देखो कैक्टस गार्डन है। यहाँ 52 प्रकार के कैक्टस के पौधे हैं। कुछ पौधे दुर्लभ प्रजाति के हैं।

आराध्या ने कहा- वाह मामाजी! यहाँ के कैक्टस बहुत ही शानदार हैं। आराध्या ने नदी देखी और पूछा मामाजी! यह कौन-सी नदी है?

मामाजी ने बताया 'यह हसदेव नदी है। यहाँ बैंबू राफ्टिंग, बोटिंग और पैडल वॉकिंग जैसी रोमांचक गतिविधियाँ भी होती हैं।"

आराध्य ने (ज़िद की) - मामा जी ! मुझे बैम्बू राफ्टिंग करनी है। सभी लोगों ने बैम्बू राफ्टिंग की, सभी खुश और आनंदित थे।

आराध्या ने कहा - मामाजी ! आज यहाँ घूमकर समुद्री जीवाश्मों के बारे में बहुत-सी जानकारियाँ मिलीं।

# लिए तिरंगा हाथ में !

लिए तिरंगा हाथ में
संगी-साथी साथ में,
आगे क़दम बढ़ाएँगे
गीत खुशी के गाएँगे।

धीर-वीर गंभीर बन
भारत की तकदीर बन,
एक नई तदवीर बन,
उजली-सी तस्वीर बन,
जन-जन का विश्वास बन

कुछ करने की प्यास बन,
मन में आस जगाएँगे
आगे क़दम बढ़ाएँगे।

जन-गण-मन का ध्यान रख
निज गौरव का भान रख,
अपनी कुछ पहचान रख
भारत का सम्मान रख,
सदा हौसला साथ रख
ठंडा अपना माथ रख,
नव-इतिहास बनाएँगे
आगे क़दम बढ़ाएँगे।

वीर शिवा सम बनें निडर,
सूरज सम हम बनें प्रखर
तनिक न बैठें हम थककर,
तपकर जाएँ और निखर।
आगे बढ़ ललकार कर
दुष्टों का संहार कर,
अरि को धूल चटाएँगे
आगे क़दम बढ़ाएँगे।।

# देश हमारा सबसे प्यारा

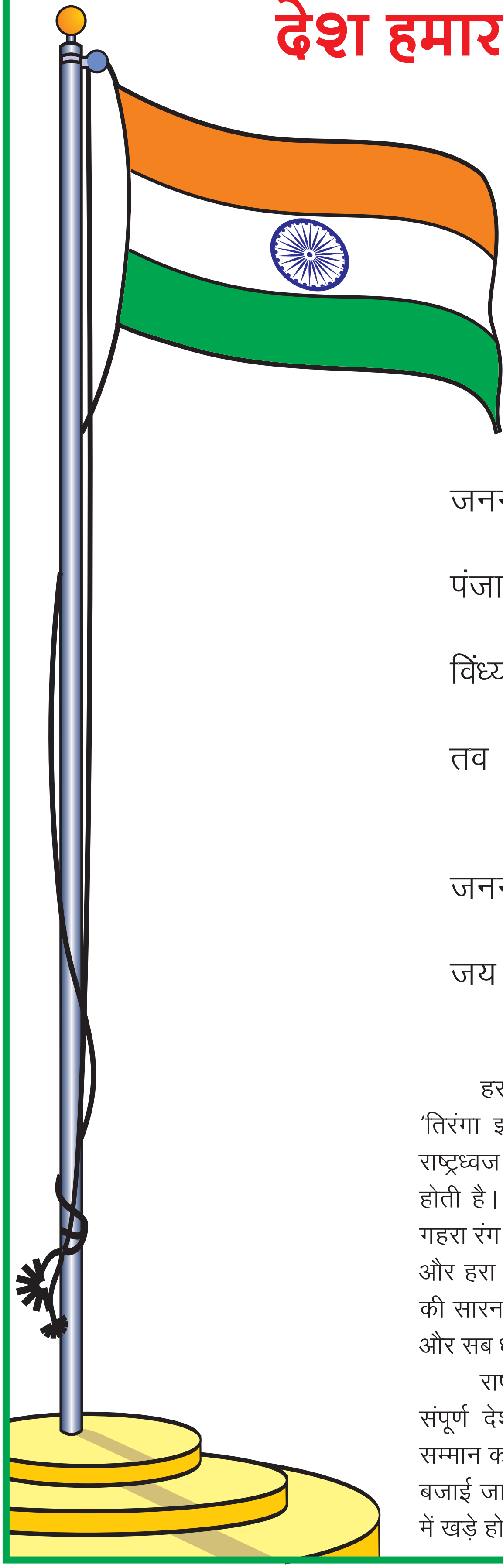

## राष्ट्रगान

जनगणमन–अधिनायक जय हे,
भारत–भाग्य–विधाता!
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि–तरंग!
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत–भाग्य–विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय, जय हे!

हर देश का अपना एक विशिष्ट झंडा और राष्ट्रगान होता है। 'तिरंगा झंडा' भारतवर्ष का राष्ट्रध्वज है और 'जनगणमन' राष्ट्रगान। राष्ट्रध्वज में ऊपर की पट्टी केसरिया रंग की और नीचे की हरे रंग की होती है। बीच की सफेद पट्टी के बीचों बीच 24 शलाकाओं का नीले गहरा रंग में गोल–चक्र होता है। केसरिया रंग त्याग का, सफेद शांति का और हरा रंग प्रकृति की सुंदरता का प्रतीक है। चक्र का स्वरूप अशोक की सारनाथ–स्थित सिंहमुद्रा में अंकित चक्र की भाँति है। यह चक्र सत्य और सब धर्मों का प्रतीक है।

राष्ट्रगान की रचना गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। इसमें संपूर्ण देश के लिए मंगल–कामना है। राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज का सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है। जब राष्ट्रगान गाया जाय या उसकी धुन बजाई जाय अथवा राष्ट्रध्वज फहराया जाय, तब हमें सावधान की स्थिति में खड़े होकर इसे सम्मान देना चाहिए।

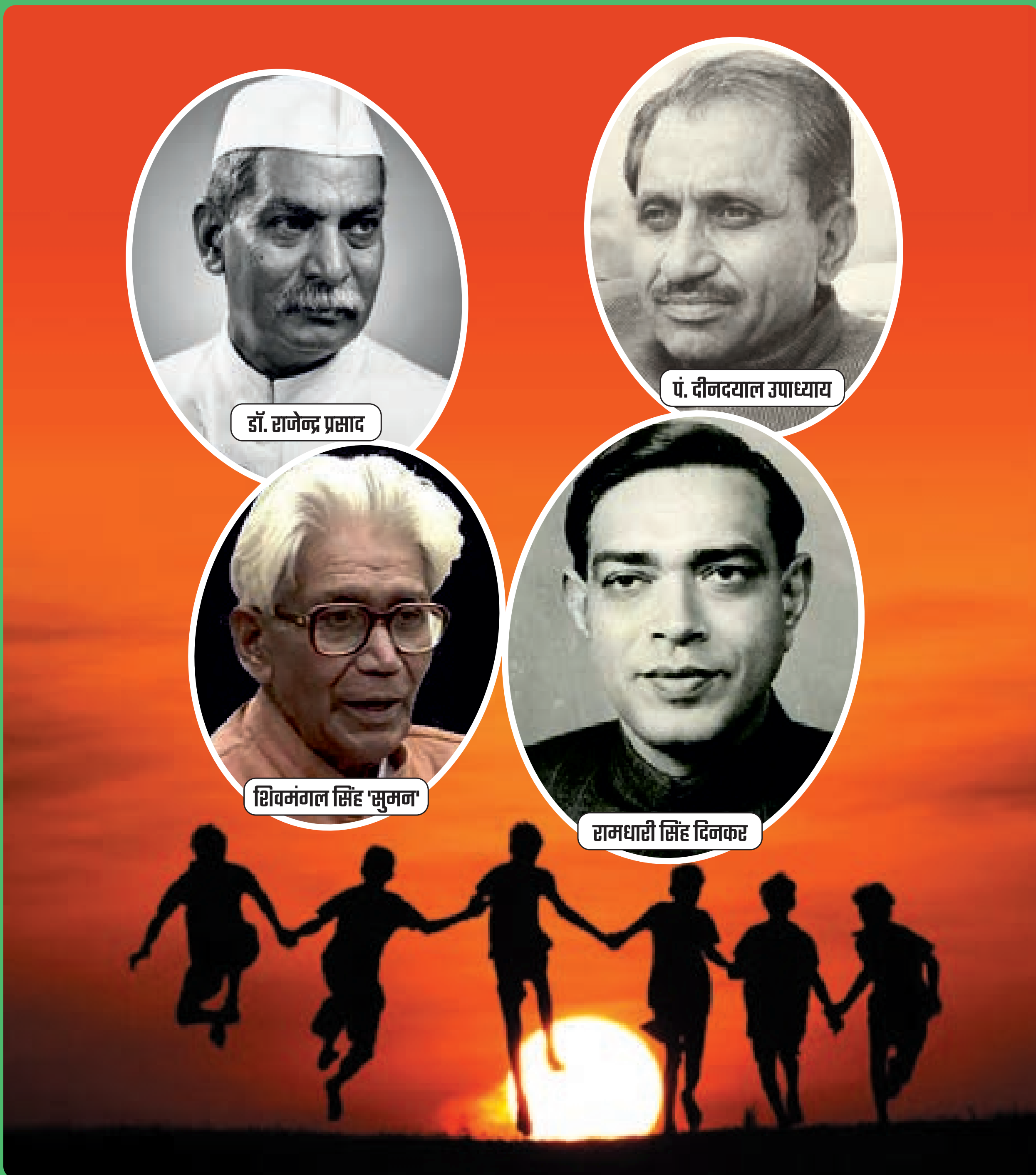


9789372001426

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)